गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 210
दि. 01.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

दूर देशों से लौटे पंखों वाले मेहमानों ने जगाया कीठम झील का सौंदर्य, सर्दियों में सूर सरोवर बना प्रवासी परिंदों का जीवंत उत्सव

(जीएनएस)। सर्दियों की पहली ठंडी हवा के साथ ही आगरा की कीठम झील एक बार फिर जीवन से भर उठी है। उत्तर प्रदेश के अंतरराष्ट्रीय महत्व वाली सूर सरोवर झील, जिसे रामसर साइट का दर्जा हासिल है, इन दिनों दुनिया के दूर-दराज इलाकों से उड़कर आए हजारों प्रवासी पक्षियों का घर बन चुकी है। रूस, यूक्रेन, चीन, मंगोलिया और साइबेरिया जैसे बर्फीले देशों से हज़ारों किलोमीटर की कठिन उड़ान भरकर भारत पहुंचने वाले ये मेहमान हर साल इसी मौसम में यहां डेरा डालते हैं, लेकिन इस बार दृश्य और भी अधिक भव्य है। इस बार रोजी पेलिकन और दुर्लभ डालमेशन पेलिकन की उपस्थिति ने झील के सौंदर्य में कई गुना वृद्धि कर दी है। सुबह की धूप जब झील पर पड़ती है तो पानी के ऊपर उड़ते सफेद पंखों का झुंड किसी चित्रकार के कैनवास जैसा दृश्य रच देता है। शांत जल पर उतरते ये पक्षी, चारों ओर फैले जंगलों का हरापन, और दूर तक गूंजते उनके कलरव मिलकर इस जगह को सर्दियों का सबसे मनमोहक बर्ड-वॉचिंग स्थल बना देते हैं, जहां देश-विदेश से पर्यटक केवल एक झलक पाने के लिए पहुंच रहे हैं।

सूर सरोवर में इन दिनों वन विभाग की गतिविधियां भी बेहद तेज हो गई हैं। बढ़ते पर्यटक दबाव के बीच प्रवासी पक्षियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। सेंचुरी के रेंजर बताते हैं कि गश्त बढ़ाई गई है, कैमरा मॉनिटरिंग सक्रिय की गई है और संवेदनशील इलाकों में मानवीय हस्तक्षेप कम करने की कोशिशें जारी हैं ताकि पक्षियों को सुरक्षित वातावरण मिल सके। पक्षियों के व्यवहार, संख्या और प्रवास अवधि का नियमित वैज्ञानिक आकलन किया जा रहा है जिससे उनकी प्रजातिगत सुरक्षा और वेटलैंड के संतुलन को बनाए रखा जा सके।

कीठम झील की जैव विविधता अपने आप में एक अद्भुत संसार है। आठ वर्ग किलोमीटर में फैली इस झील में 126 से अधिक प्रजातियों के पक्षी दर्ज किए जा चुके हैं। प्राकृतिक टापू, स्वच्छ जल, भोजन की प्रचुरता और जंगलों का शांत वातावरण इसे प्रवासी पक्षियों के लिए एक आदर्श विश्राम स्थल बनाता है। वर्ष 2025 के एशियन वाटरबर्ड सेंसस के

अनुसार, इस बार यहां 3,800 से अधिक जलपक्षियों की उपस्थिति दर्ज की गई, जो पिछले वर्षों की तुलना में बड़ी वृद्धि मानी जा रही है। यह दर्शाता है कि कीठम झील न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण प्रवासी मार्ग — सेंट्रल एशियन फ्लाईवे — पर स्थित है। इस फ्लाईवे से हर साल हजारों पक्षी अपने जीवन की सबसे लंबी यात्रा तय कर भारत पहुंचते हैं। इस बार की प्रवासी यात्रा में बार-हेडेड गूज, पिनटेल, कॉमन टील, ग्रेट कोर्मोरेंट, शोवलर, एवोसेट, पोचार्ड, विस्लिंग टील और कॉटन पिग्मी गूज जैसे तमाम परिचित मेहमान तो आए ही हैं, लेकिन सबसे विशेष उपस्थिति उन संकटग्रस्त प्रजातियों की है जिन्हें बचाने के लिए विश्व स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें डालमेशन पेलिकन, ब्लैक-नेक्ड स्टॉर्क, पेंटेड स्टॉर्क, ब्लैक-हेडेड आईबिस और रिवर टर्न प्रमुख हैं। इन प्रजातियों का यहां दिखना इस बात का प्रमाण है कि कीठम का पर्यावरण अत्यंत स्वस्थ और अनुकूल है, जहां दुर्लभ पक्षियों को भी सुरक्षित निवास मिल रहा है। कीठम झील तक पहुंचना भी बेहद सहज है। दिल्ली-आगरा मार्ग पर स्थित यह स्थान मुख्य सड़क से कुछ ही दूरी पर है, जहां से झील तक का पैदल सफर रोमांच और सौंदर्य से भरा होता है। रास्ते में घने जंगलों की पगडंडियों से गुजरते हुए अक्सर नीलगाय, स्पॉटेड डियर, हॉग डियर और मॉनिटर लिज़र्ड भी दिखाई देते हैं, जिससे यह स्थल केवल पक्षियों के लिए नहीं, बल्कि वन्यजीव प्रेमियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन जाता है। झील की ओर बढ़ते ही पक्षियों के पंख फड़फड़ाने की आवाज और जल पर उतरती उनकी आकृतियां एक अनोखी शांति और उत्साह से भर देती हैं। जैसे-जैसे ठंड और बढ़ेगी, इस झील की रौनक भी और बढ़ने वाली है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि दिसंबर और जनवरी के बीच प्रवासी पक्षियों का सबसे बड़ा झुंड यहां पहुंचेगा। फिलहाल रोजी पेलिकन, डालमेशन पेलिकन, सारस क्रेन और बार-हेडेड गूज झील की शोभा बढ़ा रहे हैं और दूर देशों के अन्य परिंदों का आगमन लगातार जारी है। सर्दियों के इस मौसम में सूर सरोवर मात्र एक झील नहीं रह जाती, बल्कि पंखों पर दुनिया भर की यात्राओं का इतिहास समेटे एक जीवंत अध्याय बन जाती है, जहां प्रकृति हर सुबह एक नई कहानी लिखती है और हर शाम हजारों पंखों की सरसराहट में अपनी ही भाषा बोलती है।

महाजन रेंज में गूंजा भारत की शक्ति का स्वर-'अजेय वारियर-25' ने दिखाया स्वदेशी सामर्थ्य और अंतरराष्ट्रीय तालमेल

(जीएनएस)। राजस्थान के बीकानेर स्थित महाजन फील्ड फायरिंग रेंज एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय सैन्य सहयोग और भारत की उभरती रक्षा क्षमता का साक्षी बना, जब भारत और ब्रिटेन की सेनाओं के बीच आयोजित संयुक्त सैन्य अभ्यास 'अजेय वारियर-25' रविवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। पंद्रह दिनों तक चले इस अभ्यास ने न केवल दोनों देशों के सहयोगात्मक सैन्य संबंधों को और अधिक मजबूत किया, बल्कि यह भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया कि आधुनिक युद्धक्षेत्र की चुनौतियों के अनुरूप संयुक्त ऑपरेशनल क्षमता कितनी विकसित हो चुकी है। इस अभ्यास के दौरान भारतीय सिख रेजिमेंट और ब्रिटेन की रॉयल गोरखा रेजिमेंट के कुल 240 विशेष रूप से चुने गए सैनिकों ने कठिन परिस्थितियों में एक साथ प्रशिक्षण लेकर साझा युद्ध कौशल का अद्भुत परिचय दिया।

रक्षा जन संपर्क अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल निखिल धवन ने बताया कि इस अभ्यास का आठवां संस्करण पूरी तरह आतंकवाद-रोधी अभियानों पर केंद्रित रहा और इसके लिए अर्ध-शहरी इलाके को ध्यान में रखते

हुए जटिल परिस्थितियों का निर्माण किया गया। संयुक्त राष्ट्र आधारित तैनाती मॉडल को आधार बनाकर सैनिकों को ऐसे परिदृश्यों में अभ्यास कराया गया, जहाँ आतंकवादियों की गतिविधि से प्रभावित क्षेत्रों में सटीक, तेज और समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता होती है। अभ्यास के वेलिडेशन फेज के दौरान दोनों देशों के सैनिकों ने उच्च स्तर की तालमेल क्षमता दिखाते हुए यह प्रमाणित किया कि कठिन से कठिन परिस्थिति में भी वे एक-दूसरे की रणनीति को समझने और लागू करने में सक्षम हैं। यह केवल प्रशिक्षण नहीं था, बल्कि दो सैन्य शक्तियों के बीच विश्वास, समझ और तकनीकी सहयोग का एक परिपक्व प्रदर्शन भी था।

अभ्यास का समापन समारोह औपचारिकता भर नहीं रहा, बल्कि यह भारत–यूके मित्रता का प्रतीक बन गया। कार्यक्रम में दोनों देशों की सांस्कृतिक झलकियों ने सौहार्द का माहौल और अधिक जीवंत बना दिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सैनिकों को सम्मानित कर आपसी विश्वास और समर्पण को नई मजबूती दी गई। समारोह को विशेष महत्व तब मिला जब 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना को प्रदर्शित करते हुए भारत की स्वदेशी रक्षा प्रणालियों की प्रभावशाली प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत न केवल वैश्विक रक्षा साझेदारी को मजबूत कर रहा है बल्कि अपनी घरेलू रक्षा उत्पादन क्षमता को भी तेजी से विकसित करने के मिशन पर अग्रसर है।

'अजेय वारियर-25' को दोनों देशों की दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी के विकास में एक और महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। यह अभ्यास बताता है कि वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में दोनों राष्ट्र साझा चिंताओं, साझा जिम्मेदारियों और साझा उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। सैन्य सहयोग के इस स्तर से यह भी संकेत मिलता है कि भारत और यूनाइटेड किंगडम भविष्य में आतंकवाद-रोधी अभियानों, बहुराष्ट्रीय शांति मिशनों और तकनीकी सहयोग के क्षेत्रों में और अधिक गहरा तालमेल विकसित करेंगे। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज पर समाप्त हुआ यह अभ्यास इस बात का मजबूत प्रमाण है कि भारत विश्व के प्रमुख देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आधुनिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है और अपनी स्वदेशी क्षमताओं को वैश्विक मंच पर दमदार रूप से प्रस्तुत कर रहा है।

शीतकालीन सत्र से पहले विपक्ष का प्रहार-सुरक्षा लोकतंत्र और विदेश नीति पर सरकार को घेरा

(जीएनएस)। संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले शनिवार को हुई सर्वदलीय बैठक इस बार पहले से कहीं अधिक राजनीतिक गर्माहट लेकर आई। बैठक का उद्देश्य भले ही सत्र के सुचारू संचालन के लिए सभी दलों से सहयोग और संवाद स्थापित करना रहा हो, लेकिन विपक्षी दलों ने सरकार पर जिस तीखेपन से सवालों की बौछार की, उसने आने वाले सत्र में टकराव के और अधिक संकेत दे दिए। बैठक शुरू होते ही विपक्ष के सांसदों ने देश की सुरक्षा व्यवस्था से लेकर लोकतंत्र की बुनियादी मर्यादाओं, कानून-व्यवस्था की स्थिति और विदेश नीति तक कई संवेदनशील मुद्दों पर गंभीर चिंता व्यक्त की।

लोकसभा में कांग्रेस के उप नेता गौरव गोगोई ने बैठक समाप्त होने के बाद मीडिया के सामने सरकार को स्पष्ट रूप से आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि इस बार का शीतकालीन सत्र केवल 15 बैठकों का होगा और यह अपने आप में इतिहास के सबसे छोटे सत्रों में से एक है, जो सरकार की नीयत पर सवाल खड़ा करता है। उनके अनुसार सत्र का देर से बुलाया जाना और उसकी अत्यंत सीमित अवधि यह दर्शाता है कि सरकार लोकतांत्रिक संवाद को सीमित करना चाहती है। उन्होंने कहा कि संसद

जनता की आवाज का मंच है और उसे इस तरह सीमित करना लोकतांत्रिक प्रणाली को कमजोर करने जैसा है।

विपक्ष ने बैठक के दौरान सुरक्षा मामलों को लेकर भी सरकार पर सीधा आरोप लगाया। हाल ही में दिल्ली में हुए बम धमाके की घटना को रेखांकित करते हुए गोगोई ने कहा कि यह कानून-व्यवस्था की गंभीर विफलता है। उन्होंने तर्क दिया कि जिस राजधानी में देश की सर्वोच्च सुरक्षा एजेंसियां मौजूद हैं, वहां इस तरह की घटनाएं होना कई बड़े सवाल खड़े करता है। इसके बावजूद सरकार इस पर खुली और विस्तृत चर्चा कराने के लिए तैयार नहीं दिखती, जो और अधिक चिंता बढ़ाने वाली बात है।

विपक्ष ने वायु प्रदूषण, किसानों और मजदूरों की गिरती आय, प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएं, जलवायु परिवर्तन से पैदा हुए संकट और रोजगार में गिरावट जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी सरकार की निष्क्रियता की आलोचना की।

बैठक के दौरान विदेश नीति भी विपक्ष के निशाने पर रही। गोगोई ने दावा किया कि भारत किसी बाहरी दबाव के कारण रूस से तेल आयात में कटौती कर रहा है, जबकि यह निर्णय सीधे-सीधे देश के आर्थिक हितों को प्रभावित करता है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकार अपनी विदेश नीति में पारदर्शिता नहीं दिखा रही और देश के संसदीय तंत्र को इन निर्णयों से दूर रखा जा रहा है। इसके साथ ही नागरिकों के डेटा की सुरक्षा से जुड़े प्रश्नों पर भी विपक्षी दलों ने सरकार की उदासीनता पर चिंता जताई। उनका कहना था कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण और तेजी से बदलते क्षेत्र पर सरकार की ओर से कोई स्पष्ट नीति या ढांचागत तैयारी नजर नहीं आती, जो भविष्य के लिए गंभीर जोखिम बन सकती है।

सर्वदलीय बैठक के दौरान माहौल भले ही तीखा रहा हो, लेकिन विपक्ष ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह इस सत्र में एकजुट होकर सरकार को कड़े प्रश्नों के कटघरे में खड़ा करेगा। गौरव गोगोई ने बताया कि रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की अगुवाई में सभी विपक्षी दलों की एक विस्तृत बैठक होगी, जिसमें शीतकालीन सत्र के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों और संयुक्त रणनीति पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा। दूसरी ओर सरकार की ओर से सहयोगपूर्ण और रचनात्मक संवाद की अपील की गई, लेकिन विपक्ष के आक्रामक तेवरों ने साफ कर दिया है कि यह सत्र छोटा भले हो, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से बेहद तीखा और विवादों से भरा रहने वाला है।

समुद्र के पार छूट गई एक ज़िंदगी: पाक जेल में बंद भारत के मछुआरे स्वप्न राणा की मौत से गांव में मातम

(जीएनएस)। पूर्व मेदिनीपुर के पाइकबाड़ गांव की वह शांत सुबह अचानक भारी हो गई, जब सरकारी अधिकारियों ने आकर यह दुखद खबर सुनाई कि गांव के बेटे, मछुआरे स्वप्न राणा, पाकिस्तान की जेल में दम तोड़ चुके हैं। दो साल से अधिक समय तक जेल में बंद रहने के बाद आई यह सूचना पूरे गांव पर जैसे बिजली-सी गिरा गई। किसी को यकीन नहीं हो रहा कि रोज़ समुद्र में जाल डालकर परिवार चलाने वाला यह साधारण सा युवक अब कभी लौटकर घर नहीं आएगा। उसकी मां की चीख, पिता की चुप्पी और बच्चों की सुबकती आंखें पूरे गांव के दर्द को बयान कर रही हैं। स्वप्न राणा समुद्र में मछली पकड़ने निकले थे और इसी दौरान अनजाने में भारत की जल-सीमा पार कर पाकिस्तान के क्षेत्र में चले गए थे। समुद्र में दिशा का अंदाज़ लगाना हर बार आसान नहीं होता—लहरें कई बार उस सीमा को मिटा देती हैं, जिसे नक्शों पर दर्शाया गया है। ठीक ऐसा ही हुआ और पाकिस्तानी समुद्री सुरक्षा एजेंसी ने स्वप्न को पकड़कर जेल भेज दिया। परिवार को लगा था कि कुछ महीनों में बात सुलझ जाएगी, लेकिन यह इंतज़ार दो साल से भी आगे चला गया और अंत में एक दर्दनाक खबर बनकर लौटा।

जिला प्रशासन ने पुष्टि की है कि विदेश मंत्रालय से लगातार संपर्क रखा जा रहा है और स्वप्न का पार्थिव शरीर भारत लाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। मगर स्वप्न के घर में सवालों का तूफ़ान उमड़ रहा है। परिवार का कहना है कि मौत की वजह बताने वाला कोई आधिकारिक दस्तावेज अभी तक नहीं दिया गया है। गांव में चर्चा है—क्या स्वप्न को वहां समय पर इलाज नहीं मिला? क्या जेल में उन्हें पर्याप्त सुरक्षा या देखभाल मिली? क्या उनकी सेहत बिगड़ने पर किसी ने ध्यान दिया? जब तक स्पष्ट जवाब नहीं मिलते, परिवार के मन में दर्द और शक दोनों गहराते जा रहे हैं।

मछुआरा समुदाय ने इस घटना को गहरी चिंता के रूप में लिया है। समुद्र में काम करने वालों के लिए सीमा पार करना कोई जानबूझकर किया गया अपराध नहीं होता, यह कई बार मौसम, धुंध या तेज़ धाराओं के कारण होता है। पूर्व मेदिनीपुर जिला मछुआरा विकास समिति के अध्यक्ष अमीन सोहेल ने कहा कि स्वप्न सिर्फ एक कैदी नहीं थे—वह समुदाय के साथी, एक पिता, एक बेटा थे। उन्होंने परिवार को हर तरह की मदद का भरोसा दिया और यह भी याद दिलाया कि पाकिस्तान द्वारा 1 जुलाई 2025 को जारी विदेशी बंदियों की सूची में स्वप्न का नाम शामिल था। लेकिन मृत्यु की सूचना अचानक दो दिन पहले ही आई—यह बात सभी को असमंजस और सदमे में डाल रही है। पाइकबाड़ गांव में आज हर चेहरे पर उदासी है। लोग कहते हैं कि समुद्र ने उसे नहीं छीना, बल्कि राजनीति और सीमाओं की कठोरता ने उसकी साँसें रोक दीं। उनके मुताबिक, ऐसी घटनाएँ यह बताती हैं कि समुद्र के किनारे रहने वाले हजारों परिवारों के लिए खतरा हमेशा बना रहता है। एक गलत मोड़, एक गलत दिशा, और किसी का घर हमेशा के लिए उजड़ सकता है। स्वप्न राणा की मौत सिर्फ एक परिवार का दर्द नहीं, बल्कि उन सभी मछुआरों की कहानी है जो समुद्र में रोज़ अपनी जान जोखिम में डालकर देश की तटरेखा के साथ अपनी रोज़ी की डोर बांधते हैं। अब पूरा गांव यही चाहता है कि स्वप्न की मौत का कारण स्पष्ट रूप से सामने आए और भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए ठोस व्यवस्था बनाई जाए।

देशभर में मतदाता सूची पुनरीक्षण का कैलेंडर बदला, SIR प्रक्रिया एक सप्ताह बढ़ी; पारदर्शिता और शुद्धता को प्राथमिकता

(जीएनएस)। देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करने के उद्देश्य से चुनाव आयोग ने 12 राज्यों में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) कार्यक्रम की समय सीमा एक सप्ताह बढ़ा दी है। आयोग ने कहा कि यह निर्णय प्रक्रियाओं को अधिक सटीक, पारदर्शी और व्यवस्थित तरीके से पूरा करने के लिए लिया गया है, ताकि मतदाता सूची में किसी भी नागरिक का नाम गलत तरीके से छूटने या दर्ज होने की संभावना को न्यूनतम किया जा सके। नई समय सारणी के मुताबिक मसौदा मतदाता सूची अब 9 दिसंबर के बजाय 16 दिसंबर 2025 को जारी होगी, जबकि अंतिम मतदाता सूची 14 फरवरी 2026 को प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली स्थित चुनाव आयोग मुख्यालय में जारी आधिकारिक विज्ञप्ति में बताया गया कि तकनीकी कार्यों, डेटा सत्यापन और स्थानीय स्तर की रिपोर्टों के मद्देनज़र अतिरिक्त समय की जरूरत महसूस हुई। आयोग के मुताबिक मतदाता सूची का विशेष पुनरीक्षण एक अत्यंत संवेदनशील प्रक्रिया है, जिसमें नागरिकता के दस्तावेज, पते का सत्यापन और नामों का पुनर्मिलान—इन सभी चरणों में पूर्ण शुद्धता और विवेक अपेक्षित है। ऐसी स्थिति में यदि किसी क्षेत्र से अतिरिक्त विवरण, आपत्ति या दावे आते हैं, तो उनकी जांच में समय लगता है। इसी कारण एसआईआर की समय सीमा बढ़ाने का निर्णय लिया गया है।

संशोधित कार्यक्रम के अंतर्गत अब घर-घर सत्यापन और गणना कार्य 11 दिसंबर 2025 तक चलेगा। इसके बाद नियंत्रक तालिका अपडेट और ड्राफ्ट मतदाता सूची तैयार करने का चरण 12 से 15 दिसंबर तक पूरा किया जाएगा। 16 दिसंबर को मसौदा सूची प्रकाशित करने के बाद 15 जनवरी 2026 तक दावों और आपत्तियों को आमंत्रित किया जाएगा। इस दौरान नागरिक अपने नाम जुड़वाने, सुधार करवाने या गैर–प्रामाणिक नामों को हटवाने के लिए आवेदन कर सकेंगे। 7 फरवरी तक नोटिस, सुनवाई और सत्यापन की पूरी प्रक्रिया चलेगी। अंततः 10 फरवरी तक गुणवत्ता परीक्षण और अंतिम अनुमोदन के बाद 14 फरवरी को देशभर की अंतिम मतदाता सूची जारी की जाएगी।

विशेष पुनरीक्षण फिलहाल 12 राज्यों में चल रहा है, जिनमें उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्य भी शामिल हैं। इन राज्यों में नागरिकता और स्थानीय निवास के आधार पर नए नाम जोड़ने और पुराने, अप्रासंगिक नाम हटाने का कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। हालांकि राजनीतिक दल अपनी–अपनी चिंताएँ भी जाहिर कर रहे हैं। विपक्षी दलों ने सर्वदलीय बैठक में कहा कि प्रक्रिया को पारदर्शी बनाए रखने के साथ-साथ पर्याप्त समय देना भी आवश्यक है। कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने बयान दिया कि तारीखें बढ़ाए जाने से कुछ राहत जरूर मिली है, लेकिन यह सुनिश्चित होना चाहिए कि दूरदराज़ क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों या प्रवासी श्रमिकों जैसे कमजोर वर्ग का नाम सूची से न छूट जाए।

देश में चुनावी कैलेंडर का प्रत्येक चरण मील का पत्थर माना जाता है। मतदाता सूची किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की रीढ़ है—यह सिर्फ डेटा का संग्रह नहीं, बल्कि नागरिकों के अधिकार का औपचारिक दस्तावेज है। ऐसे में एसआईआर प्रक्रिया का विस्तार इस बात की ओर संकेत करता है कि आयोग मतदाता सूची की शुद्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है। बढ़ी हुई समयावधि स्थानीय अधिकारियों को अधिक सावधानी से काम करने, त्रुटियों को सुधारने और जनता को अपनी जानकारी अपडेट कराने का पूरा अवसर देती है।

देश में अगले कुछ महीनों में कई राज्यों में चुनाव और राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण राजनीतिक गतिविधियाँ होने की संभावना है।

संपादकीय

अवसाद से मुक्ति

अक्सर देखा जाता है कि परीक्षाओं के दौरान छात्र तनावग्रस्त हो जाते हैं। एक भय हावी हो जाता है, जिससे वे परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते। कुछ छात्र तो अक्सर खूब पढ़कर जाने के बावजूद परीक्षा के दौरान तनाव के चलते सब कुछ भूल जाते हैं। दरअसल, हमारा शैक्षिक परिवेश हाल के दिनों में बेहद प्रतिस्पर्धी हो चला है। मासूम बच्चों के सामने गला-काट स्पर्धा होती है। विडंबना यह है कि दुनिया में सबसे बड़ी आबादी वाले देश में रोजगार के अवसर जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़े हैं, जिससे स्पर्धा और कठिन हो गई है। उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश हो या फिर नौकरी के अवसर, वे प्रतियोगियों के मुकाबले बहुत कम होते हैं, जिसकी परिणति छात्रों में बढ़ते तनाव और कालांतर में उसके अवसाद में बदलने के रूप में होती है। यही वजह है कि स्कूल-कालेजों के परीक्षा परिणाम आने पर देश में आत्महत्या करने वाले छात्रों की सुर्खियां अखबारों में बनती हैं। सुखद है कि अब आईआईटी मद्रास के शोधकर्ताओं ने ऐसे शारीरिक संकेतकों का पता लगाया है, जिससे पता चल सकेगा कि किन छात्रों में परीक्षा के दौरान चिंता बढ़ने का जोखिम अधिक है। इस खोज को शिक्षा प्रणाली में तनाव प्रबंधन व प्रदर्शन सुधारने हेतु बड़े बदलाव की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। हाल ही में यह शोध 'बिहेवियरल ब्रेन रिसर्च' में प्रकाशित हुआ है। इससे छात्रों के लिए व्यक्तिगत तनाव प्रबंधन योजना भी तैयार हो सकेगी। यह वैज्ञानिक सत्य है कि किसी भी व्यक्ति में मस्तिष्क व हृदय के बीच संचार-तंत्र टूटने से तनाव पैदा होता है। ऐसे में आईआईटी मद्रास ने परीक्षा के तनाव को पहचानने के जो जैविक संकेत पहचाने हैं, वे आने वाले समय में परीक्षा तनाव प्रबंधन में मददगार साबित हो सकते हैं। कोशिश है कि अब एआई की मदद से छात्रों के तनाव जोखिम की पहचान की जा सके। दरअसल, नये शोध की मुख्य बातें दो शारीरिक संकेतों को जोड़ने में निहित हैं। फ्रंटल अल्फा एसिमिट्री यानी एफएए, जो कि भावनात्मक नियमन का मस्तिष्क आधारित संकेतक है। दूसरा हार्ट रेट वैरिएबिलिटी, जो हृदय के अनुकूलन नियंत्रण को मापता है। ये संकेत चिंताग्रस्त छात्रों की पहचान करने में मदद करते हैं। शोधार्थियों ने पाया कि जिन छात्रों में एफएए पैटर्न नकारात्मक होता है, उनमें तनाव से हृदय के संतुलन तंत्र की क्षमता कमजोर पड़ जाती है। दरअसल, परीक्षा को लेकर जो अधिक फिक्र है, वो हृदय की प्रतिक्रिया को भी बाधित करती है। परिणामस्वरूप वे अधिक तनाव में आ जाते हैं। शोध में इन तथ्यों को भी समझने का प्रयास हुआ कि कुछ छात्र परीक्षा के तनाव के बावजूद बेहतर प्रदर्शन करने में कैसे सफल हो जाते हैं। वहीं कुछ छात्र चिंताग्रस्त होकर परीक्षा में सफल नहीं हो पाते हैं। दरअसल, साल भर नियमित पढ़ाई न करने और परीक्षा सामने आने पर वे घबराहट में तनावग्रस्त हो जाते हैं। एनसीआरटी का एक अध्ययन बताता है कि देश में 81 फीसदी छात्र परीक्षा को लेकर तनाव में रहते हैं। उम्मीद है नया शोध का निष्कर्ष समस्या का कारगर समाधान करेगा।

दो निर्णयों की वापसी और एक अवसर की चूक

> पंजाब को केंद्र से जिस पीड़ाहारी स्पर्श की सख्त ज़रूरत है, वह मिल नहीं रहा। प्रधानमंत्री पंजाब में बाढ़ के बाद के मौजूदा हालात भलीभांति जानते हैं। बीते माह केंद्र को चंडीगढ़ से संबंधित दो अधिसूचनाएं वापस लेनी पड़ी। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी की गुरुपर्व के दिन यात्रा अयोध्या और कुरुक्षेत्र में संपन्न हो गयी।

पिछले एक महीने में केंद्र की भाजपा सरकार को दो बार अधिसूचना वापस लेनी पड़ी – जिसमें एक में चंडीगढ़ स्थित पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रशासनिक ढांचे में बड़े बदलावों का प्रस्ताव था – और एक था वह विधेयक, जिसमें चंडीगढ़ प्रशासन में ही बदलावों का प्रस्ताव था, जिसको संसद के आगामी शीत सत्र में पेश करना था।

हैरान कर देने वाली इन दो वापसियों से प्रधानमंत्री मोदी की गुरुपर्व के दिन यात्रा अयोध्या और कुरुक्षेत्र पर संपन्न हो गयी- बजाय इसके, सोचिए यदि उनका आखिरी पड़ाव आनंदपुर साहिब होता, जहां गत सप्ताह की शुरुआत में नौवें गुरु, तेग बहादुर की शहादत की 350वीं सालगिरह मनाने के लिए हज़ारों लोग इस ऐतिहासिक जगह पर एकत्र हुए थे।

उस सूरत में, द ट्रिब्यून की हेडलाइन सोचिए क्या होती : 'अयोध्या से आनंदपुर साहिब, मोदी ने धर्मों को एक सूत्र में पिरोया'। प्रधानमंत्री की यात्रा 1675 में गुरु साहिब की शहादत का अनुपम संदेश दर्शाती और आह्वान करती, जब गुरु साहिब ने किसी के धर्म, यानी हिंदू धर्म को मानने के अधिकार की रक्षा की खातिर अपनी जान कुर्बान कर दी। इसकी बजाय, जैसा कि द ट्रिब्यून के 'ए सिंबॉलिक स्लिप' शीर्षक वाले संपादकीय में बताया गया, प्रधानमंत्री ने बगल के भाजपा शासित हरियाणा के कुरुक्षेत्र जाना चुना, केसरिया साफा पहन, बारंबार गुरु के बलिदान की तारीफ की। इसलिए, प्रधानमंत्री आनंदपुर साहिब क्यों नहीं गए, और जो कहना था वह इस पवित्र धरती से क्यों नहीं कहा?

विडंबना यह कि मोदी पंजाब और पंजाबियों दोनों को अच्छी तरह जानते हैं। इमरजेंसी के सालों में, गुजरात में बतौर एक भूमिगत कार्यकर्ता, वे कभी-कभी पगड़ी पहनकर सिख का भेस बदलकर गिरफ्तारी से बचे।

फिर, 1990 के दशक में, बतौर पार्टी के राष्ट्रीय सचिव, पंचकूला में रहते हुए वे हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के प्रभारी थे, और पंजाब में भी घूमते थे। साल 2019 में प्रधानमंत्री बनने के बाद, वे करतारपुर साहिब कॉरिडोर का उद्घाटन करने जाते समय,बीच में सुल्तानपुर लोधी में गुरुद्वारा बेर साहिब रुके, एकदम वज्रासन में बैठे और पहले गुरु , गुरु नानक देव को समर्पित इस गुरुद्वारे में प्रार्थना की। मोदी ने पाकिस्तान के प्रति अपनी नापसंदगी को एक तरफ रखते हुए - जबकि उसी साल फरवरी की शुरुआत में, भारतीय वायुसेना ने बालाकोट स्थित आतंकी अड्डों पर एयरस्ट्राइक की थी- और यह सुनिश्चित किया कि डेरा बाबा नानक को करतारपुर साहिब गुरुद्वारे से जोड़ने के लिए सड़क और सभी खास सुविधाएं चालू हो सकें, ताकि सिख श्रद्धालु गुरु नानक देव के जीवन के आखिरी 18 सालों से जुड़े इस गुरुद्वारे में प्रार्थना कर सकें। वर्ष 2022 में, मोदी ने उनसे मिलने आए एक सिख प्रतिनिधि मंडल से कहा, 'गुरुद्वारों में जाना, सेवा में समय बिताना, लंगर खाना, सिख परिवारों के घरों में रहना मेरी ज़िंदगी का हिस्सा रहा है'।

गत सप्ताह की शुरुआत में आनंदपुर साहिब में, सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी द्वारा आयोजित समारोह के बरक्स अकाली दल-एवं शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से भी गुरु की शहादत की याद में कार्यक्रम आयोजित किए गए। खबरों में इस बात की काफी चर्चा रही कि क्या वाकई इन समानांतर आयोजनों का पंजाबियों की अपने गुरु के प्रति श्रद्धा पर असर पड़ा - जवाब है, कतई 'नहीं'।

मोदी की उपस्थिति, यदि वे जाते, तो उनकी मौजूदगी उस अंदरूनी खींचतान को और बढ़ा डालती, जिसे सिर्फ़ भारतीय समझते हैं और जिसका आनंद लेते हैं। ऐसा लगता है, पंजाब के मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री को आमंत्रित करने के लिए मुलाकात का समय नहीं दिया गया, लेकिन अगर प्रधानमंत्री पहुंचते, तो सोचिए कि आज बिना नेता वाली पंजाब भाजपा को कितना बल मिलता।

शायद प्रधानमंत्री को अहसास हो गया होगा कि पंजाब का माहौल, यदि विकट नहीं, तो भी उदास है। बाढ़ से हुआ भौतिक और भावनात्मक नुकसान अभी भी कायम है। बिना किसी चर्चा या बहस के, पंजाब यूनिवर्सिटी और चंडीगढ़ बिल पर अचानक अधिसूचनाएं आईं - ठीक वैसे ही जैसे 2020 में कृषि कानून लागू किए गए थे- यह काम इतना बड़ा और हैरानीजनक था कि राज्य की तमाम राजनीतिक पार्टियां एक साथ उठ खड़ी हुईं और दिल्ली का विरोध किया। यहां तक कि पंजाब भाजपा भी शर्मिंदा हुई। केंद्र ने उन सभी को इसके ख़िलाफ़ एकजुट कर डाला। कृषि कानूनों की तरह ही, पिछले महीने केंद्र की कार्रवाइयों से आभास होता है कि या तो पंजाब के बारे में समझ की पूरी तरह से कमी है या जानबूझकर की गयी। इस माह एक बार फिर, प्रतिक्रिया तत्काल और तीव्र रही। हैरान हुए केंद्र को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा।

मजेदार बात यह कि मोदी यह सब बखूबी जानते हैं। वे समझते हैं कि लोकसभा में केवल 13 सीटों के साथ, पंजाब की चुनावी हैसियत बिहार या पश्चिम बंगाल जैसे बड़े राज्यों जितनी नहीं है। लेकिन क्योंकि यह पाकिस्तान के साथ लगता सीमावर्ती राज्य है, पंजाब की विशेष जरूरतें हैं और उन्हें समझना केंद्र का कर्तव्य है - चाहे पंजाबियों ने पार्टी को वोट डालकर सत्ता दी हो या नहीं।

आश्चर्यजनक यह है कि जमीनी स्थिति ठीक इसके विपरीत है। देशभर में पंजाब सबसे अधिक कर्ज में डूबा राज्य है, अरुणाचल प्रदेश के बाद, दूसरे स्थान पर, जिसका कर्ज-जीएसडीपी अनुपात 46.6 प्रतिशत है (जबकि तमिलनाडु 26.43 प्रतिशत, महाराष्ट्र 14.64 फीसदी है), भूजल स्तर प्रति वर्ष एक मीटर नीचे जा रहा है, आतंकवाद के दिनों में उद्योग-धंधे सूबे से पलायन कर गए थे और अब वापस आने में हिचकिचाहट है।

पंजाब को केंद्र से जिस पीड़ाहारी छुअन की सख्त ज़रूरत है, वह मिल नहीं पा रही। बदतर यह कि पिछले 15 दिनों में दूसरी बार, खडूर साहिब से सांसद अमृतपाल सिंह, जो देशद्रोह के आरोप में असम की जेल में है, ने एक दिसंबर से शुरू होने वाले संसद के शीतकालीन सत्र में शामिल होने के लिए पेरोल के लिए आवेदन किया है। हर किसी की जुबान पर बड़ा सवाल है कि क्या उन्हें रिहा किया जाएगा? इससे भी बड़ा सवाल है कि क्या कोई निपुण कठपुतलीवाला इस तरह का नाच नचा रहा है - और क्यों। ऐसा भी नहीं कि पंजाब यूनिवर्सिटी और चंडीगढ़ प्रशासन में, पत्थर पर लकीर की तरह यथास्थिति रहे, निश्चित रूप से, समय और जरूरत के अनुरूप सुधार दोनों जगह किया जाना एक जरूरत है। इसी प्रकार, पंजाबियों को यह पूछने का हक है कि 1985 के राजीव-लोंगोवाल समझौते के वादे के मुताबिक चंडीगढ़ पंजाब को क्यों नहीं दिया गया - हस्तांतरण की अंतिम तिथि 26 जनवरी, 1986 थी। दिमाग में घुमड़ने वाला सवाल यह है कि पंजाब भाजपा- सुनील जाखड़ जैसे वरिष्ठ नेताओं के अलावा इसके पोस्टर बॉय रवनीत सिंह बिट्टू - को इस बात का अंदाज़ा क्यों नहीं था कि चंडीगढ़ पर कानून संसद में लाया जा रहा है। स्थानीय पार्टी इकाई, जो असेंबली में अपनी यथेष्ट मौजूदगी की कमी को ऊर्जा एवं जोशपूर्ण क्रियाकलापों से पूरा करती रहती है, आज हिली हुई लग रही है। साल 2024 के लोकसभा चुनाव में, भाजपा ने उत्साहवर्धक 18.3 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे- हालांकि पिछले हफ्ते तरनतारन उपचुनाव में, पार्टी प्रत्याशी की जमानत ज़ब्त हो गई। जो भी है, कहानी आगे बढ़ चुकी है। प्रधानमंत्री ने गोवा में भगवान राम की मूर्ति का उद्घाटन किया। भाजपा की विश्वव्यापी दृष्टि में चढ़ने के लिए, ऐसा लगता है कि पंजाब को अभी इंतज़ार करना होगा।

प्रेरणा

मौन भक्ति का चमत्कार

एक समय की बात है। वनवास के दिन चल रहे थे और भगवान राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वन की पगडंडियों से होकर एक शांत सरोवर तक पहुँचे। सूरज की किरणें जल की तहों पर झिलमिला रही थीं, जैसे आकाश ने धरती को अपना सुनहरा संदेश भेजा हो। दोनों भाई नदी के तट पर पहुँचे और स्नान करने से पहले अपने-अपने धनुष भूमि पर मजबूती से गाड़ दिए। हवा में हल्की ठंडक और वातावरण में गहरी शांति घुली हुई थी।

राम और लक्ष्मण स्नान करके लौटे तो उन्होंने देखा कि उनके धनुष की नोक पर कुछ लाल रंग चिपका हुआ है। पहले तो उन्होंने सोचा कि शायद मिट्टी होगी, पर जब ध्यान से देखा तो वह रक्त के समान प्रतीत हुआ। दोनों ने तुरंत ही आसपास की मिट्टी हटाना शुरू किया। धीरे-धीरे जब गीली मिट्टी एक तरफ हट गई, तब एक छोटा-सा मेढक उनके सामने दिखा — घायल, परंतु बिना किसी शिकायत के चुपचाप पड़ा हुआ।

भगवान राम के हृदय में करुणा की लहर दौड़ गई। उनका स्वभाव ही दया और प्रेम का था। उन्होंने मेढक को अपने हाथों में उठाया और कोमल स्वर में पूछा, "हे वत्स, जब सांप तुम्हें पकड़ने आता है, तब तो तुम जोर-जोर से टर्राकर सहायता के लिए पुकारते हो। फिर आज जब हमारा धनुष तुम्हारे ऊपर आ लगा, तब तुमने आवाज क्यों नहीं दी? तुमने हमें

बुलाया क्यों नहीं?"

मेढक ने अपने छोटे-से प्राणों में भरी अत्यंत विनम्रता के साथ उत्तर दिया। उसकी आवाज धीमी थी, पर भाव अत्यंत गहरी। वह बोला, "प्रभु, जब मुझे कोई सांप पकड़ता है, तो मैं 'राम-राम' कहकर चिल्लाता हूँ, क्योंकि मुझे विश्वास होता है कि आप कहीं न कहीं मेरी रक्षा के लिए उपस्थित हैं। पर आज जब स्वयं भगवान राम धनुष गाड़ रहे थे, तब मैं किसे पुकारता? जिसके नाम का जाप कर मैं जीवन-रक्षा की आशा करता हूँ, वही तो सामने खड़े थे। ऐसे में पुकारने का अधिकार कैसे रखता? इसलिए मैं मौन रहा। यह सोचकर कि यह भी आपका ही स्पर्श है, आपकी ही लीला है, आपका ही सौभाग्य है। मेरे लिए यह दुख भी आपका प्रसाद है।"

उस छोटे जीव के वचन सुनकर लक्ष्मण की आँखें नम हो गईं और राम का हृदय गहरे, शांत समर्पण से भर उठा। उन्होंने मेढक को अपने हाथों से सहलाया और उसका घाव ठीक कर दिया। उस क्षण प्रकृति भी मानो थम गई। हवा का वेग रुक गया, सरोवर का जल शांत हो गया और वन के पक्षियों ने भी जैसे इस दिव्य संवाद को सुनने हेतु अपनी आवाजें रोक लीं।

उस दिन भगवान राम ने लक्ष्मण को समझाया कि संसार के सच्चे भक्त सुख और दुःख— दोनों को एक समान ईश्वर की कृपा मानकर स्वीकार करते हैं। उन्हें विश्वास होता है कि जो भी घटता है, वह प्रभु की इच्छा से, उनके ही संरक्षण में होता है। इसलिए वे शिकायत नहीं करते, बल्कि सब कुछ शांत भाव से सहते हैं। सच्ची भक्ति का यह स्वरूप मौन, धैर्य और पूर्ण समर्पण से भरा होता है।

राम ने मुस्कुराकर कहा, "लक्ष्मण, इस छोटे से मेढक ने हमें वह सिखाया है, जो अनेक ग्रंथ भी कभी-कभी नहीं सिखा पाते। समर्पण का अर्थ रोना, शिकायत करना या प्रसाद तभी स्वीकार करना नहीं है जब वह मीठा हो— सच्चा समर्पण वह है जो कड़वे समय में भी प्रभु को ही देखता है।"

और फिर दोनों भाई उस घायल मेढक को सुरक्षित स्थान पर रखकर अपनी यात्रा की ओर बढ़ गए। परंतु उस दिन का यह छोटा-सा प्रसंग वनवास की लंबी कथा में एक अमिट सीख बनकर रह गया—कि जिस पर भक्त का विश्वास अटल हो, उसके सामने वह मौन भी स्वयं 'भक्ति' बन जाता है।

यूएसए और चीन के बाद भारत एशिया की तीसरी प्रमुख सैन्य शक्ति बना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में भारत अब यूएसए और चीन के बाद एशिया की तीसरी प्रमुख सैन्य शक्ति बन चुका है। यह पाकिस्तान और बांग्लादेश के लिए किसी सदमे की तरह है। वहीं उनके आका देश अमेरिका और चीन के लिए भी एक झटके की तरह है, क्योंकि आने वाले वर्षों में इन्हें भी बारी-बारी पूर्वक पीछे छोड़ेगा। यह बात मैं नहीं बल्कि एशियन पॉवर इंडेक्स 2025 के8 एक वार्षिक सूची बोल रही है जो एशिया में देशों की समग्र शक्ति को मापती है। गौरतलब है कि इसमें आर्थिक, सैन्य, कूटनीतिक प्रभाव आदि आठ कैटेगिरी में देशों के संसाधन और प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। इस सूची में भारत 40.0 अंक के साथ तीसरे स्थान पर है और इसे "मेजर पावर" यानी प्रमुख शक्ति घोषित किया गया है। भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए यह पायदान हासिल किया है, जबकि टॉप पर संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरे नंबर पर चीन हैं।

एपीआई के अनुसार, भारत की आर्थिक क्षमता, फ्यूचर रिसोर्सेज और राजनयिक प्रभाव में खासा सुधार हुआ है। भारत की सैन्य क्षमता में भी निरंतर सुधार के चलते उसकी क्षेत्रीय और ग्लोबल भूमिका मजबूत हुई है। वहीं, पाकिस्तान इस सूची में 16वें स्थान पर है और टॉप 10 में नहीं है। एशियाई पावर इंडेक्स लोवी इंस्टीट्यूट द्वारा जारी किया जाता है, जो एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 27 देशों को देखता है और उनकी शक्ति संरचना का आकलन करता है। यह इंडेक्स सिर्फ सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं है बल्कि कुल प्रभाव क्षमता को मापता है, जिसमें अर्थव्यवस्था, कूटनीति, रक्षा नेटवर्क, संस्कृति आदि शामिल हैं।

लोवी इंस्टीट्यूट एशिया पावर इंडेक्स 2025 को मापने के लिए आठ मुख्य मापदंडों का उपयोग किया जाता है: सैन्य क्षमता, आर्थिक क्षमता, रक्षा नेटवर्क, कूटनीतिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, पुनःस्थापन क्षमता (रेजिलिएंस), भविष्य के संसाधन और अंतरराष्ट्रीय संबंध। कुल मिलाकर इसमें 30 उप-माप और 131 संकेतक शामिल हैं, जो किसी देश की व्यापक प्रभाव क्षमता का आंकलन करते हैं। यह इंडेक्स केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह देशों की असली ताकत को उनके क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव, पड़ोसी देशों के साथ उनके रिश्ते, तकनीकी और व्यापारिक शक्तियों, और उनके भविष्य के विकास की संभावनाओं के हिसाब से मापता है।

इस इंडेक्स के अंतर्गत हर देश को 100 अंकों के पैमाने पर स्कोर दिया जाता है, जो यह दर्शाता है कि वे एशिया में कितना प्रभावशाली हैं। लोवी इंस्टीट्यूट इस सूचकांक को एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 27 देशों पर लागू करता है और यह वार्षिक रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित होता है। इस इंडेक्स के परिणाम से देशों के भू-राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में बदलाव और उनकी क्षेत्रीय भूमिका का पता चलता है।

एशियन पॉवर इंडेक्स (एपीआई) के आठ माप निम्नलिखित हैं: पहला, सैन्य क्षमता– इसमें देश की सैन्य ताकत, हथियार, सैन्य कर्मियों और रक्षा बजट को मापा जाता है। दूसरा, आर्थिक क्षमता– देश की आर्थिक स्थिति, जीडीपी, मुद्रा रिजर्व, और अन्य आर्थिक संसाधनों का आकलन। तीसरा, रक्षा नेटवर्क– क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सैन्य गठबंधनों और सहयोग को मापा जाता है। चतुर्थ, कूटनीतिक प्रभाव– अन्य देशों के साथ राजनयिक संबंध, द्विपक्षीय समझौते और वैश्विक मंच पर देश की भूमिका।पंचम, सांस्कृतिक प्रभाव– देश की संस्कृति, भाषा, मीडिया प्रसारण और अन्य सांस्कृतिक माध्यमों के प्रभाव को दिखाता है। षष्टम, पुनःस्थापन क्षमता– प्राकृतिक आपदाओं, आर्थिक संकटों आदि का सामना करने की देश की सामर्थ्य। सप्तम, भविष्य के संसाधन– शैक्षणिक गुणवत्ता, अनुसंधान-प्रौद्योगिकी विकास और युवा आबादी की संभावना। अष्टम, अंतरराष्ट्रीय संबंध– देश की विदेश नीति, व्यापार साझेदार और वैश्विक संगठनों में उसकी भागीदारी।

वस्तुतः ये आठ माप 30 उप-मापों और 131 संकेतकों के जरिए विस्तृत रूप से मूल्यांकन किए जाते हैं, जिससे किसी देश की समग्र शक्ति का आंकलन होता है। पूरे इंडेक्स का स्कोर 100 अंकों के पैमाने पर दिया जाता है, जिससे यह पता चलता है कि कोई देश एशिया में कितना प्रभावशाली है। एशियन पावर इंडेक्स के उपर्युक्त आठ मापों का भारत के कुल स्कोर पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। भारत की सैन्य क्षमता, आर्थिक क्षमता, कूटनीतिक प्रभाव, और भविष्य के संसाधन जैसे माप उसकी पूरी ताकत को बढ़ाते हैं, जिससे भारत को बेहतर कुल स्कोर मिलता है।

उदाहरण के लिए, भारत की आर्थिक प्रगति और कूटनीतिक नेटवर्क में सुधार से इसकी रैंकिंग में मजबूती आई है। वहीं, पुनःस्थापन क्षमता और सांस्कृतिक प्रभाव जैसे माप भी भारत के क्षेत्रीय प्रभाव और वैश्विक छवि को मजबूत बनाते हैं। हालांकि, कुछ चुनौतियां जैसे प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने की क्षमता और संसाधनों का प्रभावी उपयोग भारत के स्कोर को सीमित भी कर सकता है। कुल मिलाकर, ये आठ माप मिलकर भारत की समग्र शक्ति और क्षेत्रीय भूमिका का आंकलन करते हैं, जो इस इंडेक्स में भारत के तीसरे स्थान पर आने का कारण हैं। इसलिए भारत की कुल रैंकिंग इन सभी क्षेत्रों में उसके प्रदर्शन का समग्र प्रतिबिंब होती है।

भारत ने एशियन पावर इंडेक्स के आठ मापों में सबसे अधिक सुधार आर्थिक क्षमता के क्षेत्र में किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने पिछले दशक में वैश्विक औसत के मुकाबले लगभग 90% की वृद्धि दर्ज की है, जो अन्य क्षेत्रों की तुलना में सबसे उल्लेखनीय प्रगति है। यह सुधार भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), निवेश, विनिर्माण, और सेवा क्षेत्र में तेज विकास की वजह से हुआ है।

अभियान

महाशिवरात्रि की दिव्य रात्रि: शिव-पार्वती के पावन मिलन की अलौकिक कथा, जिसका पाठ दांपत्य जीवन में बरसाता है अनंत शुभता

महाशिवरात्रि का आगमन होते ही समस्त ब्रह्मांड में भक्ति, ध्यान और दिव्यता का अद्भुत संचार होने लगता है। मान्यता है कि इसी रात आदियोगी भगवान महादेव ने हिमकन्या पार्वती का हाथ थामकर वैवाहिक जीवन की पवित्र दीक्षा ली थी। यह महोत्सव केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आदर्श दांपत्य, निष्ठा और आत्मिक प्रेम का सनातन संदेश है। शिव और शक्ति का यह मिलन, ब्रह्मांड के संतुलन का आधार बनकर आज भी संसार को ऊर्जा देता है। इसी दिव्य प्रसंग को महाशिवरात्रि के व्रत और पूजा के समय पढ़ने से दांपत्य जीवन में सामंजस्य, प्रेम और सुख बढ़ता है।

कहते हैं कि उस दिन कैलाश की घाटियों और हिमालय की चोटियों तक में उत्साह की तरंगें दौड़ रही थीं। पर्वतराज हिमाचल ने अपनी परम तपस्विनी पुत्री पार्वती के विवाह की तैयारी उसी भक्ति और श्रद्धा से की, जैसे स्वयं देवताओं का स्वागत किया जाता है। हिमाचल की पत्नी मेना सोने के कलश के साथ विधि-विधान के अनुसार विवाह की तैयारी में लगी थीं। वे कन्यादान के क्षण की प्रतीक्षा कर रही थीं, जिस क्षण उनकी पुत्री स्वयं शिव की सहचरी बनेगी।

वर-मंडप में महादेव का आगमन

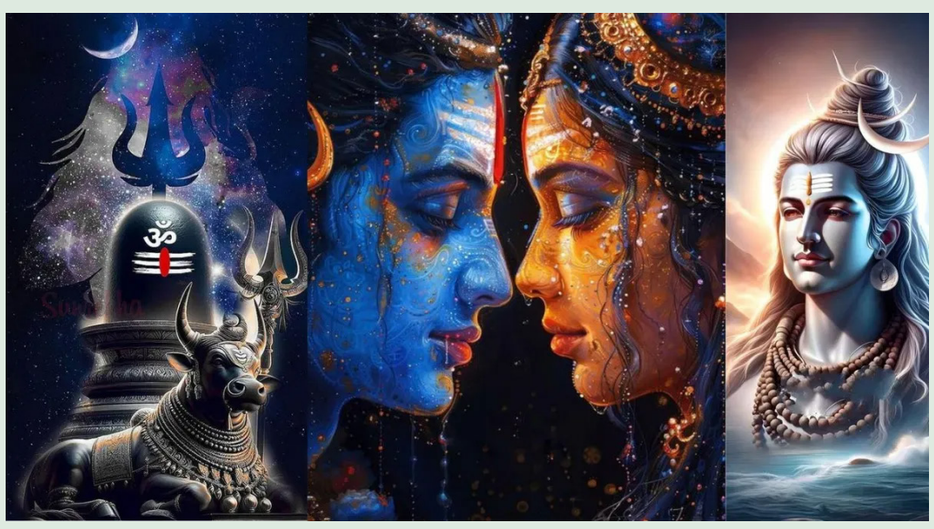

साधारण नहीं था। जहां अन्य देवताओं के विवाह में राजसी शान रहती है, वहीं शिव का स्वरूप भस्म से विभूषित, व्याघ्रचर्म धारण किए, गले में सर्पों के हार और तृतीय नेत्र की ज्योति से दमकता हुआ था। देवताओं और मुनियों की मंडली उनके साथ उपस्थित थी। यह दिव्यता और भय, दोनों का अद्भुत मिश्रण था।

जब कन्यादान की संकल्प-विधि प्रारम्भ होने वाली थी, तब पर्वतराज हिमाचल ने अग्नि, ब्राह्मण और सभी देवताओं के समक्ष भगवान शिव से उनके गोत्र, कुल और वेद-शाखा का परिचय देने का निवेदन किया। यह सुनकर शिव मौन हो गए। उनकी दिव्य प्रकृति ऐसी है कि वे न तो किसी गोत्र से बंधे हैं, न किसी परिवार से। वे स्वयं परब्रह्म हैं, निराकार, निर्गुण और अनंत।

नारद इस मौन को भली-भांति समझते थे। वे हंसते हुए बोले—हे पर्वतराज, आप भूल कर रहे हैं। यह वही शंकर हैं जिनके गुणों और स्वरूप को स्वयं ब्रह्मा और विष्णु भी पूर्णतः नहीं जान पाते। इनका कोई गोत्र नहीं, पर ये सभी गोत्रों के मूल हैं; इनका कोई कुल नहीं, पर समस्त कुलों की उत्पत्ति इनसे हुई है। यह स्वयं प्रकृति के परे स्थित परमात्मा हैं। पार्वती की तपस्या ने इनको आज आपके द्वार पर लाया है।

नारद के इन दिव्य वचनों ने हिमाचल के हृदय में विश्वास की लहर भर दी। उन्होंने प्रसन्न होकर अपनी कन्या का हाथ स्वर्ग से भी श्रेष्ठ वर के हाथ में सौंप दिया। मंत्रोच्चारण के बीच शिव ने पृथ्वी का स्पर्श कर पार्वती के करकमल को ग्रहण किया। उस पल मानो तीनों लोकों ने साँस रोक ली। देवताओं की आँखें श्रद्धा से नम हो गईं, गंधर्वों ने गीत गाए, अप्सराओं ने नृत्य किया और वातावरण 'हर-हर महादेव' की गूंज से भर उठा।

कन्यादान के बाद अग्नि के समक्ष शिव-पार्वती ने पावन सप्तपदी पूर्ण की। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र और समस्त ऋषि-मुनि इस अलौकिक विवाह के साक्षी बने। हिमालय ने दहेज में रत्न, द्रव्य, सुवर्णमुद्राएं, हजारों घोड़े, गायें, हाथी और अनगिनत रथ भेंट किए। पार्वती की शोभा उस समय ऐसी प्रतीत होती थी मानो स्वयं प्रकृति देवियों ने उनके स्वरूप में उजाला भर दिया हो।

विवाह के बाद उत्सव देर तक चलता रहा। देवियां—लक्ष्मी, सरस्वती, गंगा, अदिति, सावित्री, अहल्या, तुलसी, शतरूपा, रोहिणी, संज्ञा, रति—सभी नवदम्पति के दर्शन को आईं। शिव अपने सिंहासन पर बैठे और पार्वती उनकी बाईं ओर—यह प्रतीक था कि शक्ति हमेशा शिव के साथ रहती है।

उसी समय रति, दुःख से व्याकुल, महादेव के समक्ष उपस्थित हुई। उसने विनती की कि उसके पति कामदेव को शिव के अग्नितेज से भस्म होना पड़ा था, अतः उन्हें पुनः जीवन प्रदान किया जाए। देवियां भी विनय से खड़ी हो गईं। करुणा के समुद्र महादेव ने मुस्कुराकर रति के हाथ से कामदेव की भस्म ली और उनकी कृपा दृष्टि पड़ते ही कामदेव पुनः प्रकट हो गए। रति ने प्रसन्नता से शिव के चरणों में नमस्कार किया। कामदेव ने भी अपराधों के लिए क्षमा मांगी। महादेव ने वरदान देकर उन्हें निर्भय किया और ब्रह्मांड की मंगल व्यवस्था पुनः स्थापित हो गई।

विवाह के बाद जब शिव और पार्वती अपने जनवासे की ओर लौटे, तब वातावरण मंत्रोच्चारण, नगाड़ों, शंखनाद और देवगणों के अभिवादन से गूंज उठा। विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र और ऋषि सभी शिव की स्तुति करने लगे। यह दिव्य यात्रा केवल एक विवाह नहीं थी—यह ब्रह्मांड में प्रेम, संतुलन और ऊर्जा के पुनर्संयोजन का क्षण था।

महाशिवरात्रि की यह कथा आज भी इस तथ्य को सिद्ध करती है कि जहां शिव हैं, वहां पार्वती हैं; जहां शक्ति है, वहां शिव हैं। दोनों के पावन मिलन का स्मरण दांपत्य जीवन में सामंजस्य, धैर्य और प्रेम का संचार करता है। इस कथा का भावपूर्ण पाठ—विशेषकर महाशिवरात्रि के व्रत में—घर में सुख, शांति और शुभता का प्रवेश कराता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

राजकोट में आगामी जनवरी में आयोजित होगी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC)

- सौराष्ट्र में राजकोट वैश्विक एयरोस्पेस हब के रूप में उभर रहा है
- 'वोकल फॉर लोकल' से 'ग्लोबल एक्सीलेंस' तक राजकोट में संचालित श्रीराम एयरोस्पेस प्रधानमंत्री के विजन को दे रही है नई गति
- 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' का जीवंत उदाहरण और सौराष्ट्र में प्रिसीजन इंजीनियरिंग का उभरता हुआ केंद्र बन रहा है राजकोट
- मानक SOP के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण उत्पादन से वैश्विक कंपनियों के साथ साझेदारी को बढ़ाया जा सकता है : - श्री संदीप सताणी (प्रबंध निदेशक, श्रीराम एयरोस्पेस)

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग पावरहाउस बनने की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। इसी कड़ी में गुजरात सरकार द्वारा आगामी 8 से 9 जनवरी 2026 के दौरान राजकोट में सौराष्ट्र–कच्छ क्षेत्र के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) का आयोजन किया जा रहा है।

इस कॉन्फ्रेंस के साथ ही 8 से 11 जनवरी, 2026 तक वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एक्ज़िबिशन (VGRE) भी आयोजित होगी जो पूरे कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र के उद्योगों, MSMEs, सरकारी संस्थाओं एवं उभरते उद्यमियों को अपने उत्पाद, नवाचार और क्षमताओं को प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगी।

वाइब्रेंट गुजरात के माध्यम से अनेक स्वदेशी कंपनियाँ आज 'राइजिंग स्टार' के रूप में उभरकर सामने आई हैं। ऑटो उद्योग में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका राजकोट अब एयरोस्पेस और स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। इसी श्रृंखला में श्रीराम एयरोस्पेस एंड डिफेंस आने वाले समय में एयरोस्पेस सेक्टर में अत्यधिक संभावनाओं के साथ नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वदेशी अपनाओ', 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्पों को श्रीराम एयरोस्पेस एंड डिफेंस LLP ने व्यवहार में उतारते हुए स्थानीय क्षमता को वर्ल्ड-क्लास औद्योगिक उत्कृष्टता में बदलने का सफल प्रयास किया है। वाइब्रेंट गुजरात के माध्यम से सौराष्ट्र अब 'इनोवेशन-ड्रिवन इंडस्ट्रियल कॉरिडोर' के रूप में विकसित होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री संदीप वल्लभभाई सताणी बताते हैं कि उन्होंने अपनी कंपनी की शुरुआत वर्ष 2017 में की। वे कहते हैं, "हमें श्रीराम एयरोस्पेस के माध्यम से न्यू इंडिया की तकनीकी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने का अवसर मिला है। मेरे पिता श्री वल्लभभाई सताणी के मार्गदर्शन में इंजीनियरिंग विशेषज्ञता की मजबूत नींव पर स्थापित यह कंपनी आज देश की चुनिंदा अग्रणी संस्थाओं में शामिल हो चुकी है।"

श्री सताणी बताते हैं कि अत्याधुनिक मशीनरी और 24×7 पावर-बैक्ड असेंबली सुविधाओं के साथ कंपनी ने गुजरात में सबसे आधुनिक और सक्षम प्रिसीजन इंजीनियरिंग इकोसिस्टम विकसित किया है। इसी कारण आज कंपनी एयरबस, बोइंग, रोल्स-रॉयस, डसॉल्ट एविएशन, इसरो, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड जैसी वैश्विक एयरोस्पेस कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण एयरोस्पेस पार्ट्स की सप्लाई करने में सक्षम है।

वे आगे बताते हैं कि तकनीकी टीम के सहयोग से कंपनी ने अल्ट्रा-प्रीसिजन मशीनिंग, जटिल एयरोस्पेस टूलिंग, हाई-स्ट्रेंथ अलॉय और क्रिटिकल असेंबली जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में विशेष दक्षता प्राप्त की है। साथ ही, SAC-ISRO के लिए भारत का पहला 6 माइक्रोन RMS युक्त टेराहर्ट्ज़ एंटेना और नेविगेशन एंटेना भी विकसित किया गया है। कंपनी 8-मीटर विंग फिक्चर्स, INVAR कॉम्पोजिट लेअप टूल्स, एयरो-इंजन पार्ट्स हेतु स्ट्रेच-फॉर्मिंग डाईज़, रिफ्लेक्टर पैनल्स सहित लगभग 3000 से अधिक एयरोस्पेस टूल्स की आपूर्ति कर चुकी है। इसके अतिरिक्त, TATA-Airbus C295 विमान हेतु 11.5 मीटर लंबे, 25 टन वजनी और 15,000+ हिस्सों से निर्मित लेफ्ट और राइट विंग बॉक्स असेंबली जिग्स की सफल डिलीवरी भी कंपनी द्वारा सम्पन्न की गई है जो तकनीकी क्षमता और औद्योगिक उत्कृष्टता का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन का उल्लेख करते हुए श्री संदीप सताणी ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी अक्सर कहते हैं कि हर संकट अपने साथ एक नया अवसर लेकर आता है और इसी सोच ने हमें निरंतर नवाचार के लिए प्रेरित किया। इसी दृष्टि से कंपनी ने अल्ट्रा-प्रिसीजन मल्टी-एक्सिस मशीनिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किया है। अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों पर सिद्ध AS9100D प्रमाणित क्वालिटी मैनेजमेंट सिस्टम, एकीकृत फेब्रिकेशन–असेंबली–इंस्पेक्शन इकोसिस्टम तथा वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रशिक्षित उच्च कौशल युक्त कार्यबल, इन सभी ने श्रीराम एयरोस्पेस को विश्वस्तरीय क्षमताओं से सुसज्जित किया है।

उन्होंने आगे कहा कि श्रीराम एयरोस्पेस वास्तव में नए भारत की उस तकनीकी आकांक्षा का प्रतीक है, जिसका स्वप्न प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने देखा है। आज राजकोट की धरती इंजीनियरिंग नवाचार का केंद्र बनकर उभर रही है और गुजरात भारत की मैन्युफैक्चरिंग क्रांति की अगुवाई कर रहा है। राजकोट यह प्रमाणित कर रहा है कि स्थानीय प्रतिभा की क्षमता, उद्यमियों की दूरदर्शिता और अत्याधुनिक तकनीक का मेल भारत को वैश्विक मंच पर नई शक्ति और नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाने में सक्षम है।

'स्वागत' ऑनलाइन : टेक्नोलॉजी के माध्यम से जन समस्या का निवारण

- 'स्वागत ऑनलाइन कार्यक्रम' पोरबंदर के मोडदर के ग्रामीणों के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध हुआ
- 'स्वागत' कार्यक्रम' में की गई प्रस्तुति का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा चार दिनों के भीतर निराकरण !
- मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम से पोरबंदर के मोडदर गाँव की वर्षों पुरानी सड़क समस्या का स्थायी निवारण
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा 'स्वागत' कार्यक्रम में पोरबंदर के निकट स्थित मोडदर के किसानों को सुनकर सड़क एवं भवन विभाग को निर्देश दिए जाने से चार दिनों के भीतर ही सड़क व पुल के कार्य के लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति मिली
- पोरबंदर के पसवारी-मोडदर के बीच किसानों को खेत जाने का छोटा रास्ता मिलेगा और विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए कुतियाणा 8 किलोमीटर नजदीक पड़ेगा
- मुख्यमंत्री ने किसानों को ध्यान से सुनकर; इसकी मुझे प्रसन्नता : लखमणभाई, किसान, मोडेदरा
- मुख्यमंत्री ने स्वागत-सत्कार किया, कल्पना नहीं थी कि ऐसा काम इतनी तेजी से होगा : राणाभाई कटारा, पशुपालक

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात में लोकप्रिय बना 'स्वागत' ऑनलाइन कार्यक्रम सुदूरवर्ती लोगों की बुनियादी समस्याओं का स्थायी निवारण ला रहा है। इसका उदाहरण है पोरबंदर जिले के मोडदर गाँव का किस्सा। पोरबंदर के कुतियाणा के पास 1200 की आबादी वाला छोटा-सा गाँव मोडदर आज खुश है और इसका कारण है 'स्वागत' ऑनलाइन कार्यक्रम। बात विस्तार से। मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में पोरबंदर के मोडदर गाँव के लखमणभाई मोडदरा तथा अन्य किसानों ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के समक्ष अपने गाँव की सड़क समस्या प्रस्तुत की। मख्यमंत्री ने ग्रामीणजनों को ध्यान से सुना। गाँव की मांग थी कि उन्हें कुतियाणा पहुँचने के लिए सड़क तथा पुल बनाकर दिए जाएँ।

मुख्यमंत्री को लगा कि ग्रामीणों की समस्या वाजिब है और इससे किसानों, विद्यार्थियों तथा अन्य ग्रामीणों की सुख-सुविधा बढ़ेगी। उन्होंने तुरंत ही इसके लिए 9 करोड़ रुपए मंजूर किए और पुल का कार्य मंजूर कर तत्काल शुरू करने के निर्देश दिए। अब मोडदर तथा पसवारी गाँव के बीच माइनर ब्रिज, क्लवर्ट तथा तीन किलोमीटर सड़क निर्माण का कार्य शुरू होगा। इसके लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति दी गई है।

मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में गाँव की समस्या का निवारण होने से ग्रामीणजन भावविभोर बने हैं। श्री लखमणभाई ने कहा, "हम मुख्यमंत्री से मिलकर गाँव लौटे, उसके बाद चौथे ही दिन मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) से फोन आया कि आपकी समस्या का निराकरण हो गया है। इतना ही नहीं; इस कार्य के लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति भी दे दी गई है। हमारे छोटे-से गाँव के लिए यह बहुत बड़ी बात है।"

लखमणभाई कहते हैं कि पिछले कई वर्षों से गाँव के लोगों की भावना थी कि कुतियाणा जाने के लिए सड़क एवं पुल का निर्माण हो। हाल में लगभग चार गाँवों को पार करके जाना पड़ता है, जिसका अंतर 20 किलोमीटर है। और फिर नदी के सामने वाले तट पर 100 से अधिक किसानों के खेत हैं। इन खेतों से भी होकर गुजरना पड़ता है। किसान छोटे रास्ते का उपयोग करते, लेकिन जान जोखिम में डालकर।

लखमणभाई कहते हैं कि गाँव के लोग पशुधन के साथ नदी में उतरकर खेत में जाते। कभी-कभी वे पतवार का उपयोग करते, जिससे डूब जाने का डर हमेशा रहता। इस समस्या से अब मुक्ति मिलेगी। यह गाँव घेड क्षेत्र का होने के कारण इस गाँव में आठ महीने नदी का पानी भरा रहता है और चार महीने ही रास्ता खुला रहता है। गाँव के लोगों ने पहली बार यह समस्या जिला स्तरीय 'स्वागत' कार्यक्रम में प्रस्तुत की। पोरबंदर कलेक्टर ने अड़चनें दूर कर पुराना रास्ता खुलवाया, लेकिन ग्रामीणों की मांग नदी पर पुल निर्माण की थी। इस संबंध में मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में समस्या प्रस्तुत की गई और समस्या का हल निकला।

मोडदर के श्री रमेशभाई कंरगिया कहते हैं कि यह मार्ग हमारे लिए जीवनडोर समान सिद्ध होगा। विद्यार्थियों को स्कूल नजदीक पड़ेगा, किसानों को खेत और जब मरीज को तत्काल उपचार की जरूरत होगी, तब उसे अस्पताल जल्दी से पहुँचाया जा सकेगा और उसकी जान बचाई जा सकेगी। मोडदर के पशुपालक राणाभाई कटारा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा किए गए 'स्वागत'-सत्कार को आज भी याद करते हैं। वे हर्ष व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमें इस बात का संतोष है कि मुख्यमंत्री ने हमारी समस्या समझी और उसका तत्काल निवारण किया।

मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में मोडदर जैसे अनेक गाँवों-शहरों के नागरिकों की समस्या का समाधान हुआ है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गुजरात में उनके मुख्यमंत्रित्व काल में शुरू हुआ 'स्वागत' ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में और तेज गति से आगे बढ़ रहा है तथा 'नागरिक देवो भवः' के विचार को वास्तविक रूप दे रहा है।

कोलकाता से पकड़ा गया कफ सीरप तस्करी का मास्टरमाइंड, 25 करोड़ रुपये के फर्जी लेनदेन का पर्दाफाश

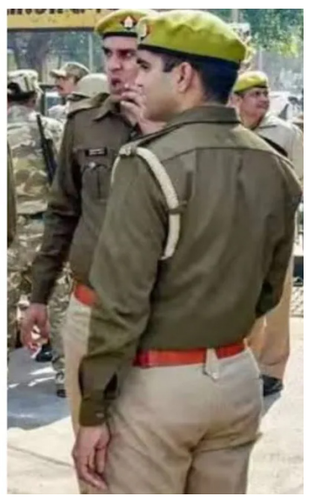

(जीएनएस)। सोनभद्र। उत्तर प्रदेश पुलिस ने कफ सीरप की अंतरराज्यीय तस्करी के बड़े नेटवर्क पर एक और जबरदस्त कार्रवाई करते हुए वाराणसी के प्रहलाद घाट निवासी भोला प्रसाद जायसवाल को कोलकाता से गिरफ्तार किया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, भोला प्रसाद विदेश भागने की फिराक में था, तभी उसे घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। अब उसे ट्रांजिट रिमांड पर सोनभद्र लाया जाएगा ताकि पूरे रैकेट की जांच को और गहराई दी जा सके।

पुलिस के मुताबिक, 18 अक्टूबर 2025 को सोनभद्र में दो कंटेनरों से 1,19,675 कफ सीरप की शीशियां बरामद हुई थीं। इस बड़ी बरामदगी के बाद गाजियाबाद में संयुक्त छापेमारी की गई, जिसमें चार ट्रकों से भारी मात्रा में कफ सीरप के साथ 20 लाख रुपये नकद भी बरामद हुए। जांच में यह सामने आया कि भोला प्रसाद ने मेसर्स शैली ट्रेडर्स, रांची के नाम पर नकली बिलिंग कर सैकड़ों कंटेनरों में कफ सीरप उत्तर भारत के कई जिलों में सप्लाई की। इसके जरिए उसने बड़े पैमाने पर काले बाजार में अवैध कारोबार को संचालित किया।

विशेष जांच दल ने भदोही, चंदौली, वाराणसी और सोनभद्र जिलों में करीब 25 करोड़ रुपये के फर्जी वित्तीय लेनदेन का खुलासा किया। जांच में यह भी पता चला कि जिन फर्मों के नाम पर बिलिंग की गई, उनमें से अधिकांश केवल कागजी और अस्तित्वहीन थीं। संबंधित बैंक खातों को तत्काल फ्रीज कर दिया गया।

ड्रग इंस्पेक्टर राजेश मौर्य की शिकायत पर दर्ज मामले में यह भी सामने आया कि बरकरा गांव स्थित फर्जी फर्म "मां कृपा मेडिकल" और "मेसर्स शिवक्षा प्रा. लिमिटेड" के माध्यम से 2024 से 2025 के बीच 7,53,000 फेंसाड्रिल सीरप की शीशियां काले बाजार में बेची गईं। इस अवैध कारोबार में भोला प्रसाद की भूमिका सबसे केंद्रीय पाई गई है।

भोला प्रसाद चंदौली, जौनपुर और गाजीपुर जिलों में वांछित चल रहा था। उसकी गिरफ्तारी से इस पूरे रैकेट की रीढ़ टूट गई है और पुलिस का कहना है कि उसके अन्य सहयोगियों पर भी जल्द ही कार्रवाई की जाएगी। पुलिस इस पूरे अंतरराज्यीय नेटवर्क की गहन जांच कर रही है ताकि कफ सीरप की अवैध तस्करी और फर्जीवाड़े से जुड़े सभी सूत्रों का खुलासा किया जा सके। इस गिरफ्तारी ने उत्तर प्रदेश पुलिस को कफ सीरप तस्करी के खिलाफ जारी अभियान में बड़ी सफलता दिलाई है। अधिकारियों का कहना है कि अब पूरे नेटवर्क के मामलों की जांच और सहयोगियों की गिरफ्तारी से अवैध कारोबार पूरी तरह समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया जाएगा। इस कार्रवाई से न केवल अवैध तस्करी की रोकथाम होगी, बल्कि आम जनता में सुरक्षा और नियमों के प्रति विश्वास भी मजबूत होगा।

जलवायु संकट की मार में भारतीय निर्यातः एल्युमीनियम से स्टील तक उद्योगों पर बड़ा खतरा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत का निर्यात क्षेत्र पहले ही वैश्विक बाजारों और अमेरिकी टैरिफ नीतियों के दबाव में जूझ रहा है, लेकिन अब इसके सामने एक और गहराता हुआ संकट खड़ा है—जलवायु परिवर्तन। दुनिया भर में बढ़ते तापमान, अनियंत्रित मौसमीय बदलाव और कठोर होते पर्यावरणीय मानकों के चलते भारत के प्रमुख निर्यात उद्योगों के भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। वैश्विक कंसल्टिंग फर्म BCG (Boston Consulting Group) की ताज़ा रिपोर्ट ने चेतावनी दी है कि विशेषकर एल्युमीनियम, लोहा और स्टील जैसे सेक्टर अभूतपूर्व जोखिमों का सामना कर रहे हैं। यह खतरा केवल उत्पादन तक सीमित नहीं, बल्कि लाभप्रदता, सप्लाई चेन और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता पर सीधा असर डाल रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत जलवायु परिवर्तन से प्रभावित शीर्ष 10 देशों में शामिल है, और यह दबाव आने वाले वर्षों में और बढ़ने वाला है। BCG के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीनियर पार्टनर सुमित गुप्ता के अनुसार COP30 में पेश 'क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2026' की चेतावनी बेहद साफ है—अगर भारत ने अब भी रणनीतिक कदम नहीं उठाए, तो आर्थिक नुकसान इतना बड़ा हो सकता है कि कई दशकों की प्रगति तक प्रभावित हो जाए। जलवायु जोखिम अब केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं रहा, यह सीधा आर्थिक स्वास्थ्य और उत्पादन सुरक्षा का प्रश्न बन चुका है। भारतीय निर्यात उद्योगों पर इसका सीधा और गहरा असर पड़ रहा है। बदलते मौसम, समुद्री तूफानों, सूखे व बाढ़ जैसी चरम घटनाओं ने कई राज्यों में औद्योगिक क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता को अस्थिर कर दिया है। BCG, RBI और WEF के संयुक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि 2030 तक भारत की GDP का लगभग 4.5% हिस्सा सिर्फ जलवायु-जनित जोखिमों की वजह से खतरे में है। और तो और, सदी के अंत तक भारत अपनी राष्ट्रीय आय का 6.4% से 10% तक हिस्सा खो सकता है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी स्थिति है।

रिपोर्ट इस बात पर भी जोर देती है कि जलवायु संकट केवल प्राकृतिक आपदाएं नहीं लाता, यह मौजूद औद्योगिक ढांचे—कारखानों, पावर सप्लाइ, लॉजिस्टिक्स, बंदरगाहों और कच्चे माल की उपलब्धता—सबको प्रभावित करता है। कई बार एक बाढ़ या चक्रवात एक पूरे औद्योगिक बेल्ट को हफ्तों के लिए ठप कर देता है, जिसका असर वैश्विक सप्लाई चेन तक महसूस किया जाता है।

BCG का अनुमान उद्योग जगत के लिए और भी चिंताजनक है—2050 तक वैश्विक कंपनियों के EBITDA (कमाई) का 5% से 25% हिस्सा सिर्फ जलवायु जोखिमों की वजह से प्रभावित हो सकता है। इसका मतलब है कि आने वाले वर्षों में लाभ कमाना कठिन होता जाएगा, जबकि लागतें—बीमा, ऊर्जा, अनुपालन और संरचनात्मक बदलाव—तेजी से बढ़ेंगी। भारत के एल्युमीनियम, स्टील और लौह उद्योग, जो ऊर्जा-गहन सेक्टर माने जाते हैं, इस संकट की पहली पंक्ति में खड़े हैं। हालांकि भारत की कई कंपनियां अब सतत निवेश, कार्बन कटौती और हरित तकनीक अपनाने की दिशा में कदम उठा रही हैं, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह गति अभी पर्याप्त नहीं है। रिपोर्ट कहती है कि यदि भारत को निर्यात की प्रतिस्पर्धा बनाए रखनी है और रोजगार बचाना है, तो नीति-निर्माण में त्वरित और ठोस हस्तक्षेप आवश्यक है—वरना आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन भारत की अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ा व्यवधान साबित हो

भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण हरित परिसर की ओर महत्वपूर्ण कदम

(जीएनएस)। भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में 30 नवंबर, 2025 (रविवार) को एक भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिसर को अधिक हरा–भरा, स्वच्छ एवं पर्यावरणीय संतुलन के अनुरूप विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित इस अभियान का नेतृत्व मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने किया।

कार्यक्रम में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमांशु शर्मा सहित मंडल के सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपने-अपने हाथों से पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि वृक्षारोपण पहल के अंतर्गत कार्यालय परिसर में एरेका पाम (Areca Palm) के कुल 28 पौधे लगाए गए। यह पौधा न केवल आकर्षक एवं सुशोभित स्वरूप वाला है, बल्कि प्राकृतिक वायु शोधक होने के साथ-साथ वातावरण में नमी एवं सकारात्मक ऊर्जा भी बढ़ाता है।

रेल प्रशासन का यह प्रयास कार्यालय परिसर को हरियाली से समृद्ध कर स्वस्थ एवं स्वच्छ कार्य परिवेश उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होगा।

पूर्वी चंपारण में भीषण सड़क हादसा: तेज रफ्तार ट्रक ने पांच जिंदगी खत्म कीं, गुस्से में फूटा जनसैलाब

(जीएनएस)। पूर्वी चंपारण। बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में रविवार सुबह एक ऐसा दिल दहला देने वाला हादसा हुआ जिसने पूरे इलाके को शोक और गुस्से में डुबो दिया। कोटवा थाना क्षेत्र के दीपउ मोड़ पर एक तेज रफ्तार ट्रक ने सड़क किनारे खड़े पाँच लोगों को बेरहमी से कुचल दिया। टक्कर इतनी भयानक थी कि सभी पाँचों लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। सुबह-सुबह हुई इस दुर्घटना की खबर कुछ ही मिनटों में पूरे इलाके में फैल गई और देखते ही देखते माहौल तनावपूर्ण हो गया।

स्थानीय लोगों में जबरदस्त आक्रोश फैल गया। ग्रामीणों ने मृतकों के शव सड़क पर रखकर नेशनल हाइवे–27 को पूरी तरह जाम कर दिया। दोनों ओर किलोमीटरों लंबी लाइनें लग गईं, एंबुलेंसें तक फँस गईं और यात्रियों को घंटों तक भारी परेशानी झेलनी पड़ी। भीड़ ने साफ कहा कि जब तक चालक की तुरंत गिरफ्तारी और पीड़ित परिवारों को उचित मुआवज़ा घोषित नहीं किया जाता, जाम नहीं हटेगा।

मौके पर पहुंचे पुलिस और प्रशासन के अधिकारी लगातार भीड़ को शांत करने की अपील करते रहे, लेकिन गुस्सा इतना अधिक था कि बातचीत कई घंटों तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकी।

हादसे में केवल जानें ही नहीं गईं, बल्कि कई लोग गंभीर रूप से घायल भी हुए। पुलिस के अनुसार कम से कम 12 लोग बुरी तरह जख्मी हैं जिन्हें ग्रामीणों की मदद से नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। कई घायलों की हालत बेहद नाजुक बताई जा रही है, जिनमें से कुछ को मोतिहारी सदर अस्पताल रेफर किया गया है। डॉक्टरों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं, क्योंकि घायलों की संख्या और स्थिति दोनों ही चुनौतीपूर्ण हैं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने अतिरिक्त पुलिस बल, दंगा नियंत्रण दस्ता और आरएएफ की तैनाती कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि भीड़ की उत्तेजना और सड़क पूरी तरह जाम होने के कारण नियंत्रण स्थापित करने में कठिनाई हो रही है, लेकिन प्रयास जारी है। ट्रक को कब्जे में ले लिया गया है और उसके चालक की तलाश के लिए एक विशेष टीम बना दी गई है।

इस बीच, ग्रामीणों ने प्रशासनिक लापरवाही के गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि दीपउ मोड़ पर लंबे समय से तेज रफ्तार वाहनों के कारण दुर्घटनाएँ हो रही हैं, लेकिन न तो यहाँ स्पीड ब्रेकर लगाया गया और न ही चेतावनी संकेत। कई गांवों के लोगों ने एक स्वर में कहा कि यह मोड़ मौत का जाल बन गया है और लगातार शिकायतों के बावजूद अधिकारी चुप हैं। ग्रामीणों का साफ कहना है कि सुरक्षा उपाय लागू होने की लिखित घोषणा तक वे जाम नहीं हटाएँगे।

हाईवे पर फँसे लोगों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है—अस्पतालों की ओर जाती एंबुलेंस भी जाम में अटक गईं। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने और जांच में सहयोग करने की अपील की है।

फिलहाल पूरा इलाका तनाव, दुख और गुस्से की गिरफ्त में है, और वह एक सवाल लगातार उठ रहा है—क्या एक और हादसे का इंतज़ार करना ही प्रशासन के लिए मजबूरी है, या अब किसी ठोस

बिहार में नई सरकार के गठन के बाद IAS अधिकारियों का व्यापक तबादला और नई जिम्मेदारियों का वितरण

(जीएनएस)। पटना। बिहार में नई सरकार के गठन के कुछ ही दिनों बाद राज्य प्रशासन में बड़े पैमाने पर आईएएस अधिकारियों का तबादला किया गया है। इस दौरान कई वरिष्ठ अधिकारियों को नई जिम्मेदारियां दी गई हैं, तो कुछ को अतिरिक्त प्रभार सौंपे गए हैं। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से इस संबंध में अधिसूचना भी जारी कर दी गई है, जिसमें सभी तबादलों और नई जिम्मेदारियों का विस्तार से विवरण दिया गया है।

जारी अधिसूचना के अनुसार बिहार राज्य योजना परिषद के परामर्शक सीके अनिल अब राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग में प्रधान सचिव नियुक्त किए गए हैं। वहीं ग्रामीण कार्य विभाग के अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार सिंह को महानिदेशक एवं मुख्य जांच आयुक्त सामान्य प्रशासन विभाग के पद पर पदस्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि दीपक कुमार सिंह पहले भी अपर मुख्य सचिव, राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग का अतिरिक्त प्रभार संभाल रहे थे।

उद्योग विभाग के अपर मुख्य सचिव मिहिर कुमार सिंह को बिहार के विकास आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया है। बिहार भवन नई दिल्ली के स्थानिक आयुक्त कुंदन कुमार को उद्योग विभाग में सचिव बनाया गया है। कुंदन कुमार के पास पहले निवेश आयुक्त मुंबई, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी बिहार फाउंडेशन, प्रबंध निदेशक बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण और प्रबंध निदेशक आधारभूत संरचना विकास प्राधिकरण का अतिरिक्त प्रभार था।

लघु जल संसाधन विभाग के सचिव बी. कार्तिकेय धनजी को उद्योग विभाग के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त कर दिया गया है। वहीं वाणिज्य कर विभाग के सचिव संजय कुमार सिंह को गृह विभाग में विशेष कार्य पदाधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। संजय कुमार सिंह स्वास्थ्य विभाग के सचिव के अतिरिक्त प्रभार में हैं और उनके पास वाणिज्य कर आयुक्त, अपर आयुक्त वस्तु एवं सेवा कर (GST), और सामान्य प्रशासन विभाग के जांच आयुक्त का भी अतिरिक्त प्रभार है।

दरभंगा प्रमंडल के प्रमंडलीय आयुक्त कौशल किशोर को तिरहुत प्रमंडल के भी प्रमंडलीय आयुक्त का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। वहीं तिरहुत प्रमंडल के पूर्व प्रमंडलीय आयुक्त राजकुमार को परिवहन विभाग में सचिव के पद पर नियुक्त किया गया है।

इस बड़े तबादला और जिम्मेदारियों के पुनर्वितरण से स्पष्ट होता है कि नई सरकार प्रशासनिक ढांचे में अपने भरोसेमंद और सक्षम अधिकारियों को महत्वपूर्ण पदों पर स्थापित कर बिहार के विकास और सुचारू संचालन को सुनिश्चित करना चाहती है। अधिकारियों की यह नियुक्तियां राज्य के प्रशासनिक कामकाज और विभिन्न विभागों की कार्यकुशलता को नई दिशा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही हैं।

महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव की तैयारियां पूरी, महायुति और महा विकास अघाड़ी के बीच कड़ा मुकाबला

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव को लेकर राजनीतिक दल पूरी तरह तैयार हो गए हैं। 2 दिसंबर को होने वाले इस चुनाव में महायुति और महा विकास अघाड़ी के बीच कड़ा मुकाबला देखा जा रहा है। राजनीतिक जानकार इसे महायुति के लिए अग्नि परीक्षा के रूप में देख रहे हैं, क्योंकि 2024 में विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई वाली महायुति ने 288 सीटों में से 235 पर जीत हासिल की थी, जबकि महा विकास अघाड़ी को करारी हार का सामना करना पड़ा था।

इस बार 2 दिसंबर को स्थानीय निकाय चुनाव की वोटिंग होगी, जिसमें 246 म्युनिसिपल काउंसिल और 42 नगर पंचायतों के लिए मत डाले जाएंगे। यह सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय तीन-लेवल की प्रक्रिया का पहला चरण है। चुनाव नतीजे महायुति के पिछले एक साल के कार्यकाल का जनता द्वारा मूल्यांकन करने का अवसर भी होंगे, वहीं विपक्ष को खुद को साबित करने का मौका मिलेगा। चुनाव अभियान का समय 1 दिसंबर रात 10 बजे तक बढ़ा दिया गया है। वोटिंग 2 दिसंबर को होगी और 3 दिसंबर को मतगणना के बाद परिणाम घोषित कर दिए जाएंगे। इस दौरान कुल 6,859 सदस्य और 288 अध्यक्ष पदों की किस्मत का फैसला होगा।

राज्य निर्वाचन आयुक्त दिनेश टी. वाघमारे ने 4 नवंबर को चुनाव शेड्यूल की घोषणा करते हुए मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट लागू कर दिया था। चुनाव में करीब 1.07 करोड़ से ज्यादा मतदाता हिस्सा लेंगे। पूरे राज्य में 13,355 पोलिंग स्टेशन तैयार किए गए हैं और चुनाव प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए 66,000 से अधिक कर्मचारियों को तैनात किया गया है। हर पोलिंग स्टेशन पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनें लगाई जाएंगी।

राजनीतिक मुकाबले की बात करें तो भारतीय जनता पार्टी, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजीत पवार की नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी का सत्ताधारी महायुति गठबंधन उद्धव ठाकरे की शिवसेना (UBT), शरद पवार की NCP (SP) और कांग्रेस की महा विकास अघाड़ी से भिड़ेगा। शुरुआती रुझानों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी ने पहला वोट डाले जाने से पहले ही 100 पार्षद और तीन नगर अध्यक्ष पद बिना किसी विरोध के हासिल कर लिए हैं। पार्टी के राज्य इकाई प्रमुख रवींद्र चव्हाण ने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में जनता के भरोसे का परिणाम बताया।

इस चुनाव के परिणाम न केवल स्थानीय निकायों में सत्ता के समीकरण तय करेंगे, बल्कि आगामी विधानसभा और राष्ट्रीय राजनीति के लिए भी दिशा तय करने वाले संकेत देंगे। राजनीतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि यह चुनाव महायुति के लिए अपनी लोकप्रियता बनाए रखने और विपक्ष को चुनौती देने की महत्वपूर्ण परीक्षा साबित होगा।

इंदौर में चाइनीज़ मांझे से 16 वर्षीय छात्र की दर्दनाक मौत, दोस्त भी घायल

(जीएनएस)। इंदौर। मध्य प्रदेश के इंदौर में मंगलवार शाम एक दर्दनाक हादसे ने पूरे शहर को स्तब्ध कर दिया। तेजाजी नगर थाना क्षेत्र के राला मंडल इलाके में पतंगबाज़ी के दौरान इस्तेमाल किए गए जानलेवा चाइनीज़ मांझे ने 16 वर्षीय गुलशन की जान ले ली। जानकारी के अनुसार, गुलशन अपने दो दोस्तों के साथ बाइक से घर लौट रहा था, तभी सड़क के बीचों-बीच लटकी धारदार डोर उसके गले पर आ लगी। डोर इतनी तेज थी कि उसने गुलशन के गले पर गहरा चोट पहुँचाई, जिससे वह मौके पर ही गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे में घायल गुलशन के दो दोस्तों को भी प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया है। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और घायल को एमवाय अस्पताल पहुंचाया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम के लिए शव को अस्पताल के शवगृह में भेज दिया गया है। हादसे के बाद गुलशन के परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। उनका कहना है कि इलाके में कई बार शिकायतों के बावजूद चाइनीज़ मांझे की बिक्री और उपयोग पर रोक नहीं लगाई गई, जिसका खामियाज़ा उनका मासूम बेटा अपनी जान देकर चुका।

स्थानीय लोगों ने पूरे क्षेत्र में खुलेआम बेचे जा रहे जानलेवा मांझों के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई है। तेजाजी नगर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और बताया कि नियमों के बावजूद कुछ दुकानें प्रतिबंधित डोर बेच रही हैं, जिन पर जल्द सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हर साल इस तरह की घटनाओं के बावजूद चाइनीज़ मांझे का उपयोग नहीं रुक रहा है, जिससे लगातार लोगों की जान खतरे में पड़ रही है। इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर प्रशासन और पुलिस की लापरवाही पर सवाल खड़े कर दिए हैं। शहरवासी प्रशासन से मांग कर रहे हैं कि चाइनीज़ मांझे की बिक्री और उपयोग पर तत्काल और सख्त रोक लगाई जाए, ताकि आगे किसी और परिवार को ऐसी त्रासदी का सामना न करना पड़े।

यह घटना सिर्फ एक युवा की मौत नहीं है, बल्कि पूरे शहर के लिए चेतावनी है कि सुरक्षा नियमों की अनदेखी और खतरनाक वस्तुओं का खुलेआम इस्तेमाल कितने जानलेवा परिणाम ला सकता है।

जयपुर में प्रेमी जोड़े पर भयावह हमला, घर वालों ने पेट्रोल डालकर आग के हवाले किया, दोनों की हालत गंभीर

(जीएनएस)। जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में शुक्रवार रात एक ऐसी दर्दनाक घटना सामने आई, जिसने पूरे इलाके में दहशत फैला दी। मोखमपुरा थाना क्षेत्र के बाड़ोलाव गांव में एक प्रेमी-प्रेमिका को उनके ही घरवालों ने पेट्रोल डालकर आग के हवाले कर दिया। दोनों गंभीर रूप से झुलस गए और उन्हें तत्काल SMS अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। घटना के बाद इलाके में तनाव और भय का माहौल छा गया है।

जानकारी के अनुसार, प्रेमी-प्रेमिका रात लगभग एक बजे खेत में मिलने आए थे। इसी बीच कुछ लोगों ने उन्हें घेर लिया और पहले पेट्रोल डालकर फिर आग लगा दी। दोनों ने मदद के लिए चिल्लाया, जिस पर कुछ गांववालों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर उन्हें लपटों से बाहर निकाला। DSP दीपक खंडेलवाल ने बताया कि दोनों लोगों के शरीर के 60 से 70 प्रतिशत हिस्से झुलस गए हैं। प्रारंभिक जांच के अनुसार यह घटना प्रेम संबंधों से जुड़ी हुई नजर आ रही है और परिवार की नाराजगी के चलते यह हिंसक कदम उठाए जाने की संभावना जताई जा रही है। पुलिस ने घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचकर FSL टीम के साथ सबूत एकत्रित किए और जांच शुरू कर दी। कुछ संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि पीड़ितों की हालत स्थिर होने पर उनके बयान लिए जाएंगे, जिससे घटना के सभी पहलुओं का खुलासा किया जा सके।

यह घटना न केवल परिवार के भीतर प्रेम संबंधों को लेकर उत्पन्न तनाव को उजागर करती है, बल्कि समाज में बढ़ती हुई हिंसा और कट्टरपंथ के खतरों को भी सामने लाती है। स्थानीय लोग और प्रशासन इस मामले को गंभीरता से ले रहे हैं, ताकि अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके। पूरे क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और पुलिस लगातार जांच में जुटी हुई है।

यह मामला प्रेम संबंधों में उत्पन्न पारिवारिक संघर्ष और सामजिक दबाव के कारण की गई हिंसा का भयावह उदाहरण है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसी घटनाओं से न केवल युवाओं की जिंदगी खतरे में पड़ती है, बल्कि समाज में भय और अविश्वास की भावना भी फैलती है।

जबलपुर में हनीट्रैप का सनसनीखेज मामला, महिला और साथियों ने युवक को ब्लैकमेल कर पीटा, एक लाख रुपये की मांग

(जीएनएस)। जबलपुर। मध्यप्रदेश के जबलपुर में सोशल मीडिया से शुरू हुए हनीट्रैप का एक भयानक मामला सामने आया है, जिसने पूरे शहर को सकते में डाल दिया है। लार्डगंज थाना क्षेत्र के शताब्दीपुरम इलाके में यह घटना घटी, जहाँ इंस्टाग्राम पर दोस्ती कर युवक को फंसाने की पूरी योजना बनाई गई थी। युवक से मित्रता करने के कुछ ही दिनों बाद मामला गंभीर रूप ले लिया, जब महिला ने उसे मिलने बुलाया और उसके दो साथियों ने युवक को घेर लिया। बताया जा रहा है कि युवक उस समय बाइक से घर लौट रहा था और तय स्थान पर पहुँचते ही उसे घेरकर मारपीट की गई। आरोपियों ने उसे धमकाते हुए एक लाख रुपये की मांग शुरू कर दी और ब्लैकमेलिंग शुरू कर दी।

पुलिस ने इस पूरे मामले में महिला रागिनी शर्मा और उसके साथियों विवेक तिवारी व साहिल बर्मन को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों के मोबाइल जब्त कर उनके चैट और कॉल रिकॉर्डिंग की जांच की जा रही है, जिससे यह पता लगाया जा रहा है कि उन्होंने किस तरह यह जाल बुना और युवक को फंसाया। कोतवाली सीएसपी रीतेश शिव ने बताया कि यह मामला हनीट्रैप की पूर्वनिर्धारित स्क्रिप्ट जैसा प्रतीत होता है। सोशल मीडिया पर दोस्ती, अचानक मुलाकात, धमकी और ब्लैकमेल — पूरा जाल पहले से तैयार किया गया था। फरियादी ने साहस दिखाते हुए सीधे थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिस पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया।

पूछताछ में आरोपियों ने कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। शुरुआती जांच में यह सामने आया कि यह योजना युवक को झूठे मामलों में फंसाने के उद्देश्य से बनाई गई थी। मोबाइल फोन जब्त कर पूरे चैट इतिहास और कॉल रिकॉर्डिंग्स की गहन जांच की जा रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि सोशल मीडिया के माध्यम से इस तरह की घटनाओं में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और युवाओं को सतर्क रहने की सख्त जरूरत है।

इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि यादव कॉलोनी पुलिस चौकी के दो आरक्षकों की भूमिका संदिग्ध पाई गई। पुलिस ने दोनों को लाइन हाजिर कर दिया है और उनके खिलाफ विभागीय जांच शुरू कर दी गई है। जांच रिपोर्ट के आधार पर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की संभावना है। इस घटना ने शहर और प्रदेश में सोशल मीडिया पर बढ़ते अपराधों और हनीट्रैप जैसी योजनाओं की गंभीरता को उजागर कर दिया है। यह मामला सिर्फ एक युवक के शोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं और अभिभावकों के लिए चेतावनी भी है कि ऑनलाइन मित्रता के नाम पर किस तरह से जिंदगी जोखिम में पड़ सकती है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि आरोपियों को किसी भी स्थिति में कानून की गिरफ्त से कोई नहीं बचा सकता और सोशल मीडिया पर सतर्क रहने की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस मामले ने प्रशासन और पुलिस की सक्रियता की भी परीक्षा खड़ी कर दी है और उम्मीद जताई जा रही है कि भविष्य में ऐसे अपराधों पर रोक लगाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बेटे की शादी सादगी और सामाजिक सरोकार के साथ उज्जैन में सामूहिक विवाह समारोह में की, समरसता और अनुकरणीय उदाहरण बना

(जीएनएस)। उज्जैन। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने छोटे पुत्र डॉ. अभिमन्यु यादव का विवाह समारोह सामाजिक समरसता, सादगी और अनुकरणीय परंपरा के प्रतीक रूप में उज्जैन में संपन्न कराया। यह विवाह कार्यक्रम किसी भव्य 'डेस्टिनेशन' समारोह नहीं बल्कि एक 'डिवाइन मैरिज' के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें मुख्यमंत्री ने यह संदेश दिया कि शादियों में होने वाले अपव्यय को रोका जा सकता है और समाज के सभी वर्गों को प्रेरणा मिल सकती है।

इस अवसर पर योग गुरू स्वामी रामदेव ने 21 जोड़ों के सामूहिक विवाह संस्कार का संचालन किया। स्वामी रामदेव ने कहा कि यह पहल देश के प्रभावशाली और राजनीतिक व्यक्तियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण है। उन्होंने यह भी कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने सार्वजनिक और सादगीपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने पुत्र का विवाह सामूहिक विवाह समारोह में किया।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने सभी नव-दंपतियों को बधाई दी और मुख्यमंत्री के सामाजिक समरसता के प्रयास की प्रशंसा की। समारोह में सभी वर्गों के नव-दंपति शामिल थे, जिनमें अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के वर-वधू भी सम्मिलित थे। पंडित धीरेंद्र शास्त्री महाराज ने कहा कि सामूहिक एवं कम खर्च वाले विवाह समारोहों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए और समाज का हर वर्ग इसे अपनाकर आगे बढ़े। उन्होंने कहा कि इस विवाह कार्यक्रम के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश जीवंत हो रहा है और भेदभाव से परे सामाजिक समरसता का अद्भुत दृश्य देखने को मिला। समारोह में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, मनसा देवी ट्रस्ट हरिद्वार के अध्यक्ष महंत श्री रवींद्र पुरी महाराज और जूना अखाड़ा के मुख्य संरक्षक एवं अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महामंत्री पूज्य स्वामी हरि गिरि महाराज ने सभी नव दंपतियों को एक-एक लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री के पुत्र डॉ. अभिमन्यु और उनकी पत्नी डॉ. इशिता सहित सभी नव दंपतियों ने संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। समारोह की भोजन व्यवस्था भी सामूहिक और सरल थी, जो इस कार्यक्रम की सादगी और सामूहिक विवाह की भावना के अनुरूप थी। स्थानीय पुलिस, प्रशासन और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मिलकर समारोह को व्यवस्थित रूप से संचालित करने में सहयोग किया। इस सामूहिक विवाह समारोह ने न केवल मुख्यमंत्री के सामाजिक दृष्टिकोण को उजागर किया, बल्कि समाज के सभी वर्गों के लिए समरसता और सादगी के अनुकरणीय संदेश को भी प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम उज्जैन और मध्यप्रदेश में सामूहिक विवाह की परंपरा को नए सिरे से प्रोत्साहित करने वाला उदाहरण बन गया है।

रांची में दूल्हे ने बारात निकलने से पहले की आत्महत्या प्रेम विवाद और मानसिक प्रताड़ना की कहानी

(जीएनएस)। रांची। झारखंड की राजधानी रांची के न्यू मधुकम इलाके में शनिवार को एक ऐसी दुखद घटना घटी जिसने पूरे परिवार और क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया। बारात निकलने से कुछ ही घंटे पहले नीतेश पांडेय, जो भारतीय रेलवे में ट्रेन मैनेजर के पद पर तैनात थे, ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। फंदे पर झूलते नीतेश को देखकर परिवार में चीख-पुकार मच गई और चारों तरफ खुशी से भरे माहौल में अचानक मातम का सन्नाटा छा गया।

नीतेश की आत्महत्या की पृष्ठभूमि एक पुराने प्रेम विवाद से जुड़ी हुई है। जानकारी के अनुसार, वर्ष 2017 में नीतेश का बिहार में एक शिक्षिका के साथ प्रेम संबंध था। दोनों ने एक-दूसरे से शादी करने का वादा किया था, लेकिन बाद में नीतेश ने इस वादे से मुकरकर परिवार की मर्जी से अपनी शादी तय कर ली। इस बात से प्रेमिका का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

बताया गया कि 25 नवंबर को नीतेश का तिलक समारोह हो रहा था, तभी पुलिस ने प्रेमिका की शिकायत के आधार पर उसे थाने ले लिया। परिजनों का आरोप है कि इस दौरान पैसे लेकर पुलिस ने नीतेश को छोड़ दिया था और बारात के अन्य मांगलिक कार्यक्रम जारी रहे। परिवार का कहना है कि पूर्व प्रेमिका और कुछ अन्य लोगों की मानसिक प्रताड़ना और दबाव ने नीतेश को आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया।

नीतेश के पिता ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराते हुए आरोप लगाया है कि उनके बेटे को आत्महत्या के लिए उकसाया गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है और कहा जा रहा है कि मामले में मानसिक उत्पीड़न, दबाव और पुराने प्रेम विवाद को भी जांच में शामिल किया जाएगा। इस घटना ने समाज और परिवारों के लिए चेतावनी पैदा कर दी है कि मानसिक दबाव, प्रेम विवाद और सामाजिक अपेक्षाओं के चलते युवा कभी-कभी अपनी जिंदगी की कीमत अदा कर बैठते हैं। क्षेत्रवासियों और प्रशासन ने परिवार को सांत्वना दी है, और मामले की गहन जांच कर दोषियों के खिलाफ उचित कार्रवाई की जा रही है। यह मामला सिर्फ एक युवा की मौत नहीं है, बल्कि मानसिक प्रताड़ना और सामाजिक दबाव की भयावह वास्तविकता को उजागर करता है।